RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 177
दि. 01.04.2026, बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

ईरान पर अमेरिका का बड़ा दावा—'सत्ता परिवर्तन' से लेकर सैन्य चेतावनी तक, मध्य पूर्व में बढ़ता तूफान

वॉशिंगटन से आई यह खबर केवल एक बयान नहीं, बल्कि वैश्विक राजनीति के उस उबाल का संकेत है जो आने वाले समय में बड़े भू-राजनीतिक बदलावों का कारण बन सकता है। अमेरिका के रक्षा मंत्री Pete Hegseth ने ईरान को लेकर जो दावा किया है—कि वहां "सत्ता परिवर्तन" हो चुका है—उसने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। यह बयान ऐसे समय आया है जब Iran, Israel और United States के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच चुका है और सैन्य गतिविधियां तेजी से बढ़ रही हैं।

पेंटागन में प्रेस ब्रीफिंग के दौरान Pete Hegseth ने साफ शब्दों में कहा कि अब ईरान में "नया शासन" है और उसे अंतरराष्ट्रीय हालात को समझते हुए समझदारी दिखानी होगी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि अमेरिका बातचीत के लिए तैयार है, लेकिन यह बातचीत दबाव के साथ होगी। उनका संदेश स्पष्ट था—या तो समझौता, या फिर और बड़े सैन्य हमले।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे संवेदनशील पहलू यह है कि क्या वास्तव में ईरान में सत्ता परिवर्तन हुआ है। अमेरिकी दावे के अनुसार, ईरान के लंबे समय तक सर्वोच्च नेता रहे Ali Khamenei की मृत्यु के बाद सत्ता उनके बेटे Mojtaba Khamenei को सौंप दी गई है। हालांकि, इस बदलाव की कोई स्पष्ट और आधिकारिक पुष्टि ईरान की ओर से सामने नहीं आई है। यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस दावे को लेकर संदेह और जिज्ञासा दोनों बने हुए

हैं। मोजतबा खामेनेई का सार्वजनिक रूप से सामने न आना इस रहस्य को और गहरा करता है—क्या यह वास्तव में सत्ता का स्थिर हस्तांतरण है या फिर पर्दे के पीछे चल रहा कोई अस्थायी और अस्थिर सत्ता समीकरण?

दूसरी ओर, अमेरिका की रणनीति "डिप्लोमेसी और डिटरेंस" यानी बातचीत और दबाव—दोनों का मिश्रण नजर आ रही है। Donald Trump के नेतृत्व में अमेरिका ने यह संकेत दिया है कि वह बातचीत के लिए तैयार है और ईरान को पहले से ही शर्तों की जानकारी है। लेकिन इसके साथ ही सैन्य कार्रवाई को भी तेज किया जा रहा है, जिससे साफ होता है कि अमेरिका किसी भी स्थिति में पीछे हटने के मूड में नहीं है।

पिछले 24 घंटों के घटनाक्रम को देखें तो Pete Hegseth के अनुसार अमेरिका ने 200 से अधिक "डायनामिक स्ट्राइक" किए हैं। ये हमले पारंपरिक युद्ध की तरह नहीं, बल्कि अत्याधुनिक तकनीक और रियल-टाइम इंटेलिजेंस के आधार पर किए गए हैं, जहां हर पल नए लक्ष्य तय किए जाते हैं और उन्हें तुरंत निशाना बनाया जाता है। अमेरिका का दावा है कि इन हमलों के कारण ईरानी सैन्य ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा है—कमांड बंकर तबाह हुए हैं, संचार व्यवस्था प्रभावित हुई है और कई शीर्ष सैन्य अधिकारी छिपने को मजबूर हो गए हैं।

ईरान की ओर से भी जवाबी कार्रवाई की खबरें सामने आई हैं, लेकिन अमेरिका का कहना है कि हाल के समय में मिसाइल और ड्रोन हमलों में कमी आई है, जो इस बात का संकेत हो सकता है कि दबाव का असर पड़ रहा है। हालांकि, युद्ध जैसे हालात में ऐसी जानकारी अक्सर रणनीतिक भी हो सकती है, इसलिए इसे पूरी तरह अंतिम सत्य मानना जल्दबाजी होगी।

इस पूरे संकट का एक बड़ा आयाम नाटो और अमेरिका के सहयोगियों की भूमिका भी है। NATO को लेकर Pete Hegseth का बयान काफी तीखा रहा। उन्होंने कहा कि इस संकट ने यह उजागर कर दिया है कि अमेरिका के सहयोगी देश किस हद तक साथ खड़े होने को तैयार हैं। उनका यह भी कहना था कि कई देशों ने अतिरिक्त सैन्य सहायता देने में हिचक दिखाई, जिससे गठबंधन की मजबूती पर सवाल खड़े होते हैं। यह संकेत देता है कि आने वाले समय में अमेरिका अपने वैश्विक गठबंधनों की समीक्षा भी कर सकता है।

जमीनी हालात की बात करें तो तस्वीर बेहद जटिल और खतरनाक दिखाई देती है। अमेरिकी दावों के अनुसार, ईरान के कई सैन्य ठिकाने प्रभावित हुए हैं, बुनियादी सुविधाएं जैसे बिजली और पानी बाधित हुए हैं और सेना का मनोबल गिर रहा है। लेकिन इतिहास यह भी बताता है कि ऐसे हालात में अक्सर राष्ट्र और ज्यादा आक्रामक रुख अपना लेते हैं, जिससे संघर्ष और लंबा खिंच सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह टकराव केवल दो देशों के बीच का संघर्ष नहीं है। इसमें Israel, खाड़ी देश, और वैश्विक शक्तियां भी अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। यदि स्थिति और बिगड़ती है, तो यह एक व्यापक क्षेत्रीय युद्ध का रूप ले सकती है, जिसका असर वैश्विक अर्थव्यवस्था, तेल आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ेगा।

अंततः, Pete Hegseth का यह बयान एक चेतावनी भी है और एक रणनीतिक संदेश भी। अमेरिका यह दिखाना चाहता है कि उसके पास विकल्प हैं और वह निर्णायक कार्रवाई करने को तैयार है, जबकि ईरान पर दबाव बनाया जा रहा है कि वह बातचीत की मेज पर आए। आने वाले कुछ दिन और हफ्ते यह तय करेंगे कि यह तनाव बातचीत में बदलता है या फिर एक बड़े सैन्य संघर्ष में तब्दील हो जाता है, जिसका असर पूरी दुनिया को झेलना पड़ सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के साणंद में Kaynes Semicon प्लांट का शुभारंभ किया

- Kaynes Semicon सुविधा की शुरुआत भारत के आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम को और मज़बूत करती है; यह मज़बूत सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम है: प्रधानमंत्री
- भारत वैश्विक बाज़ार में भरोसेमंद सेमीकंडक्टर सप्लायर के तौर पर अपनी भूमिका को मज़बूत कर रहा है: प्रधानमंत्री
- भारत ने 2021 में, 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' शुरू किया था; यह मिशन सिर्फ़ औद्योगिक नीति नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास की घोषणा है: प्रधानमंत्री
- 21वीं सदी का यह दौर सिर्फ़ आर्थिक प्रतिस्पर्धा का समय नहीं है, बल्कि यह भविष्य के तकनीकी परिदृश्य को आकार देने का समय है: प्रधानमंत्री
- इस दशक में भारत जो तकनीकी पहल कर रहा है, वे आने वाले दशकों में उसके नेतृत्व को और मज़बूत करेंगी: प्रधानमंत्री
- 21वीं सदी का भारत सिर्फ़ बदलाव का साक्षी नहीं बन रहा, बल्कि उस बदलाव का नेतृत्व करने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज गुजरात के साणंद में Kaynes Technology के सेमीकंडक्टर प्लांट का शुभारंभ किया। इसके साथ ही इस केंद्र में उत्पादन कार्य शुरू हो गया है। प्रधानमंत्री ने बताया कि वे 28 फरवरी को Micron प्लांट में उत्पादन शुरू होने के अवसर पर साणंद में मौजूद थे, और ठीक एक महीने बाद Kaynes की इस उपलब्धि के अवसर पर फिर से यहाँ आए हैं। प्रधानमंत्री ने भारत की सेमीकंडक्टर यात्रा की गति की जानकारी दी। श्री मोदी ने कहा, "यह महज़ एक संयोग नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि भारत का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम कितनी तेज़ी से विकसित हो रहा है।" प्रधानमंत्री ने Kaynes Technology के नेतृत्व, गुजरात सरकार और प्लांट में कार्यरत सभी कर्मचारियों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने इस बात पर गर्व व्यक्त किया कि एक भारतीय कंपनी ने सेमीकंडक्टर चिप निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा है। उन्होंने बताया कि Kaynes अब वैश्विक सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बन गई है। श्री मोदी ने कहा, "यह एक शानदार शुरुआत है। आने वाले दिनों में, कई भारतीय कंपनियाँ वैश्विक सहयोग के माध्यम से दुनिया को मज़बूत सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला प्रदान करेंगी।" प्रधानमंत्री ने कहा कि आज की यह उपलब्धि वास्तव में 'Make in India, Make for the World' (भारत में बनाओ, दुनिया के लिए बनाओ) के मंत्र को साकार करती है। यह प्लांट कैलिफ़ोर्निया स्थित एक कंपनी को 'इंटेलिजेंट पावर मॉड्यूल्स' की आपूर्ति कर रहा है और इसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा पहले ही निर्यात के लिए बुक हो चुका है। उन्होंने कहा कि साणंद और सिलिकॉन वैली के बीच असल में एक नया पुल बन गया है। श्री मोदी ने ज़ोर देकर कहा, "साणंद में बने ये मॉड्यूल्स अमरीकी कंपनियों तक पहुँचेंगे और वहाँ से पूरी दुनिया को ऊर्जा प्रदान करेंगे।"

प्रधानमंत्री ने इस फ़ैक्टरी में बन रहे इंटेलिजेंट पावर मॉड्यूल्स के रणनीतिक महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा कि ये भारत और दुनिया, दोनों जगह इलेक्ट्रिक वाहन इकोसिस्टम और भारी उद्योगों को मज़बूत करेंगे। उन्होंने ऐसी वैश्विक साझेदारियों को दुनिया के बेहतर भविष्य की नींव बताया। प्रधानमंत्री मोदी ने ज़ोर देकर कहा, "यह सिर्फ़ एक प्रोडक्ट की बात नहीं है, यह भारत के वैश्विक बाज़ार में भरोसेमंद सेमीकंडक्टर सप्लायर बनने की बात है।" महामारी से लेकर भू-राजनीतिक संघर्षों तक इस दशक में आई चुनौतियों पर विचार करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि वैश्विक सप्लाई चेन, खासकर चिप्स, दुर्लभ खनिज और ऊर्जा के क्षेत्र में, सबसे ज़्यादा प्रभावित हुई हैं। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इन सप्लाई चेन में रुकावटें पूरी मानवता की प्रगति में बाधा डालती हैं। श्री मोदी ने कहा, "भारत जैसे लोकतांत्रिक देश का इस दिशा में आगे बढ़ना पूरी दुनिया के विकास के लिए बहुत ज़रूरी है।" प्रधानमंत्री ने याद दिलाया कि भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर हब बनाने का संकल्प कोविड महामारी के दौरान ही लिया गया था, जिसके कारण 2021 में इंडिया-सेमीकंडक्टर मिशन शुरू किया गया। उन्होंने बताया कि सेमीकंडक्टर में आत्मनिर्भरता का असर एआई, इलेक्ट्रिक वाहनों, स्वच्छ ऊर्जा, रक्षा और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में भी आत्मनिर्भरता के रूप में दिखता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "यह मिशन सिर्फ़ एक औद्योगिक नीति नहीं है, यह भारत के आत्मविश्वास की घोषणा है।" प्रधानमंत्री ने मिशन की प्रगति का ब्योरा देते हुए बताया कि छह राज्यों में 1,60,000 करोड़ से अधिक की लागत वाली 10 परियोजनाओं पर काम चल रहा है, जिनमें Kaynes और Micron की परियोजनाएँ महत्वपूर्ण हिस्से हैं।

उन्होंने स्वदेशी 'ध्रुव 64' माइक्रोप्रोसेसर के विकास की भी जानकारी दी जो 5G इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक ऑटोमेशन के लिए सुरक्षित प्रोसेसर प्लेटफ़ॉर्म मुहैया कराता है। श्री मोदी ने कहा, "भारत सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन के हर स्तर पर डिज़ाइन और निर्माण की क्षमता विकसित कर रहा है।" प्रधानमंत्री ने भारत की सेमीकंडक्टर महत्वाकांक्षा के अगले चरण की घोषणा करते हुए, 'इंडिया-सेमीकंडक्टर मिशन 2.0' के बारे में बात की, जिसे इस वर्ष के केंद्रीय बजट में पेश किया गया था। सेमीकंडक्टर उपकरणों और सामग्रियों के घरेलू उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, इस नए चरण का लक्ष्य पूर्ण-स्तरीय भारतीय सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "हमारा प्रयास अब ऐसा इकोसिस्टम बनाना है, जिससे हम घरेलू और वैश्विक, दोनों तरह की सप्लाई चेन में बड़ी साझेदारियाँ कर सकें।" प्रधानमंत्री ने भविष्य के लिए तैयार श्रमशक्ति बनाने के भारत के प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने बताया कि 85,000 से ज़्यादा डिज़ाइन पेशेवरों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य बहुत जल्द हासिल कर लिया जाएगा। उन्होंने 'चिप्स टू स्टार्टअप' कार्यक्रम के बारे में भी बात की, जिसके तहत लगभग 400 विश्वविद्यालयों और स्टार्टअप्स को आधुनिक डिज़ाइन टूल्स तक पहुँच दी गई है, जिसके परिणामस्वरूप 55 से ज़्यादा चिप्स का डिज़ाइन और निर्माण हुआ है। श्री मोदी ने ज़ोर देकर कहा, "तकनीकी विकास और कुशल श्रमशक्ति को साथ-साथ चलना चाहिए, और भारत इन दोनों को सुनिश्चित कर रहा है।" प्रधानमंत्री ने उद्योग के अनुमानों का हवाला देते हुए बताया कि भारत का सेमीकंडक्टर बाज़ार अभी लगभग $50 बिलियन का है और इस दशक के अंत तक इसके $100 बिलियन से ज़्यादा होने का अनुमान है। भारत के सेमीकंडक्टर संकल्प के बारे में वैश्विक निवेशकों में दिख रहे ज़बरदस्त उत्साह को देखते हुए, श्री मोदी ने कहा, "हमारा लक्ष्य अपनी ज़रूरतों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा चिप्स यहीं भारत में बनाना है।"

प्रधानमंत्री ने भारत के समानांतर प्रयासों के बारे में बात की, जिनका उद्देश्य कच्चे माल की मज़बूत सप्लाई चेन सुनिश्चित करना है। इन प्रयासों में 'पैक्स सिलिका' (Pax Silica) में भारत की सदस्यता और 'राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल्स मिशन' की शुरुआत शामिल है। उन्होंने खनिज रीसाइक्लिंग के लिए 1,500 करोड़ रुपये की योजना और ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल जैसे तटीय राज्यों को जोड़ने वाले 'रेयर अर्थ कॉरिडोर' की घोषणा पर विशेष बल दिया। श्री मोदी ने कहा, "बेहतर होता अगर यह कार्य 30-40 वर्ष पहले ही शुरू हो गया होता, लेकिन अब भारत इस पर 'मिशन मोड' में काम कर रहा है।"

इस दशक को भारत का 'टेकएड' (Techade) बताते हुए, प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि मौजूदा दौर केवल आर्थिक प्रतिस्पर्धा का नहीं है, बल्कि भविष्य के तकनीकी परिदृश्य को आकार देने का भी है। उन्होंने एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) को अपनाने में भारत के नेतृत्व, 'डिजिटल इंडिया' और 'फिनटेक' की सफलता, और हाल ही में हुए 'एआई इम्पैक्ट समिट' का ज़िक्र किया। ये सभी बातें इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय लोग तकनीक पर कितना भरोसा करते हैं और उसे खुले दिल से अपनाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "हमारे सेमीकंडक्टर क्षेत्र के उभार से भारत के एआई इकोसिस्टम को बहुत बड़ी ताकत मिलेगी।" प्रधानमंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि 21वीं सदी का भारत केवल बदलाव का साक्षी बनकर नहीं रह गया है, बल्कि वह इन बदलावों का नेतृत्व करने के लिए भी पूरी तरह से दृढ़-संकल्पित है। उन्होंने कई ऐतिहासिक नीतिगत फैसलों का ज़िक्र किया—जैसे 'IN-SPACe' के ज़रिए अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोलना, परमाणु क्षेत्र में ऐतिहासिक 'SHANTI बिल' लाना, और 'क्वांटम कंप्यूटिंग' में मिशन-मोड पर निवेश करना।

उन्होंने कहा कि ये सभी कदम आने वाले कई दशकों के लिए भारत की तकनीकी और ऊर्जा सुरक्षा की नींव रख रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने पूरे विश्वास के साथ कहा, "भारत हर महत्वपूर्ण तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश और सुधार कर रहा है; यह दुनिया भर के निवेशकों के लिए बहुत बड़ा अवसर है।"

प्रधानमंत्री ने विश्वास प्रकट किया कि 'केन्स' (Kaynes) प्लांट में बनने वाले उत्पाद, 'दुनिया की फैक्ट्री' के रूप में भारत की यात्रा को और भी अधिक मज़बूती प्रदान करेंगे, प्रधानमंत्री ने सरकार की उस प्रतिबद्धता को दोहराया जिसके तहत 'ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस' (व्यापार करने में आसानी), 'ईज़ ऑफ़ मैन्युफैक्चरिंग' (विनिर्माण में आसानी), और 'ईज़ इन लॉजिस्टिक्स' (लॉजिस्टिक्स में आसानी) को लगातार बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

ट्रंप की चेतावनी के बाद खाड़ी में आग—तेल टैंकर पर ड्रोन हमला, बढ़ता टकराव और वैश्विक खतरे की आहट

मध्य पूर्व एक बार फिर विस्फोटक हालात की ओर बढ़ता दिख रहा है। Donald Trump की कड़ी चेतावनी के तुरंत बाद Iran की ओर से खाड़ी क्षेत्र में तेल से भरे टैंकर पर ड्रोन हमला इस बात का संकेत है कि अब यह टकराव केवल बयानबाजी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समुद्री मार्गों और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति को सीधे प्रभावित करने लगा है। दुबई के पास हुए इस हमले में कुवैत का झंडा लिए 'अल-सल्मी' नामक जहाज को निशाना बनाया गया, जिसमें भारी मात्रा में कच्चा तेल लदा हुआ था।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, ड्रोन हमले के बाद जहाज में आग लग गई, जिसे काफी प्रयासों के बाद नियंत्रित कर लिया गया। राहत की बात यह रही कि कोई बड़ा तेल रिसाव नहीं हुआ और चालक दल सुरक्षित रहा, लेकिन यह घटना अपने आप में बेहद गंभीर है क्योंकि यह दुनिया के सबसे संवेदनशील समुद्री मार्गों में से एक—Strait of Hormuz—के पास हुई है। यह वही क्षेत्र है जहां से दुनिया की एक बड़ी हिस्सेदारी का कच्चा तेल गुजरता है। ऐसे में यहां किसी भी तरह की अस्थिरता का असर वैश्विक अर्थव्यवस्था, तेल की कीमतों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर सीधा पड़ता है।

इस घटना ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। जहाज में करीब 1.2 मिलियन बैरल सऊदी और 800,000 बैरल कुवैती कच्चा तेल था, जो चीन की ओर जा रहा था। शुरुआती संकेत बताते हैं कि 'अल-सल्मी' शायद असली लक्ष्य नहीं था। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स यानी Islamic Revolutionary Guard Corps ने दावा किया कि उनका निशाना एक ऐसा कंटेनर जहाज था जिसका संबंध इजरायल से था। लेकिन घटनास्थल और शिपिंग डेटा से संकेत मिलता है कि पास खड़े दूसरे जहाज को लक्ष्य बनाया गया होगा और हमला गलती से तेल टैंकर पर पड़ गया। यदि यह सच है, तो यह स्थिति और भी खतरनाक हो जाती है, क्योंकि इससे यह साबित होता है कि इस क्षेत्र में सैन्य कार्रवाई कितनी अनिश्चित और जोखिमपूर्ण हो चुकी है। इस हमले के बाद ईरान की ओर से जो बयान आए हैं, वे तनाव को और बढ़ाने वाले हैं। आईआरजीसी के खातम अल-अनबिया मुख्यालय के प्रवक्ता इब्राहिम जोलफाघरी ने बेहद आक्रामक भाषा में कहा कि ईरान पर हमला करने वाले किसी भी देश के "पैर काट दिए जाएंगे।" यह बयान केवल सैन्य चेतावनी नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक संदेश भी है, जो यह दिखाता है कि ईरान अब पीछे हटने के बजाय जवाबी रणनीति पर चल रहा है।

स्थिति को और जटिल बनाता है अंतरराष्ट्रीय आयाम। रिपोर्ट्स में यह भी सामने आया है कि रूस के चेचन लड़ाके जरूरत पड़ने पर ईरान की मदद के लिए तैयार हैं, खासकर यदि United States जमीनी हमला करता है। इसका मतलब यह है कि यह संघर्ष केवल क्षेत्रीय नहीं रह सकता, बल्कि इसमें बाहरी शक्तियों की भागीदारी से यह एक बड़े युद्ध का रूप भी ले सकता है।

यदि हम इस पूरे घटनाक्रम को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें, तो यह साफ दिखता है कि यह हमला एक अलग घटना नहीं, बल्कि लगातार बढ़ते तनाव की कड़ी है। 28 फरवरी को United States और Israel द्वारा ईरान पर की गई सैन्य कार्रवाई के बाद से ही खाड़ी क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ गई थी। अब समुद्री मार्गों पर हमले शुरू हो जाना इस बात का संकेत है कि संघर्ष का दायरा फैल रहा है।

वैश्विक स्तर पर इसका सबसे बड़ा असर ऊर्जा बाजार पर पड़ सकता है। Strait of Hormuz के आसपास किसी भी प्रकार की अस्थिरता तेल की सप्लाई चेन को बाधित कर सकती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें तेजी से बढ़ सकती हैं। इसका सीधा असर आम लोगों की जेब पर भी पड़ेगा—पेट्रोल, डीजल और अन्य आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ सकते हैं।

अंततः, यह घटना एक चेतावनी है कि मध्य पूर्व का यह संकट अब एक खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुका है। जहां एक ओर अमेरिका और उसके सहयोगी सैन्य दबाव बढ़ा रहे हैं, वहीं ईरान जवाबी कार्रवाई के जरिए अपनी स्थिति मजबूत दिखाने की कोशिश कर रहा है। ऐसे में हर नया हमला, हर बयान और हर रणनीतिक कदम इस पूरे क्षेत्र को और अस्थिर बना सकता है।

आने वाले दिनों में यह तय होगा कि क्या यह टकराव कूटनीति की दिशा में मुड़ेगा या फिर एक बड़े युद्ध का रूप ले लेगा—लेकिन फिलहाल इतना स्पष्ट है कि खाड़ी में उठी यह आग केवल एक जहाज तक सीमित नहीं रहने वाली, बल्कि इसके धुएं का असर पूरी दुनिया महसूस कर सकती है।

संपादकीय

मां-बाप की देखभाल के लिए कानूनी बाध्यता

वैसे तो यह किसी भी सभ्य समाज के लिये शर्मनाक है कि जन्म देकर पालन-पोषण करने वाले मां-बाप की जीवन की सांझ में बेकद्री की जाए। फिर गुजारे भत्ते के लिये कानून-प्रशासन से मांग करनी पड़े। लेकिन यह मौजूदा समय की हकीकत है कि ऐसे किस्से गाहे-बगाहे सुनने को मिलते हैं। सही मायनों में बुढ़ापा अपने आप में बड़ी चुनौती है, जब शरीर की क्षमताओं का ह्रास होने लगता है और आय के स्रोत लगभग खत्म होने लगते हैं। सेवानिवृत्ति की जमा-पूंजी बच्चों की पढ़ाई, शादी-ब्याह और मकान बनाने में खर्च हो जाती है। उन लोगों की स्थिति तो और दुखद हो जाती है जो निजी क्षेत्र या किसी प्राइवेट काम-धंधे में लगे रहते हैं। उन्हें तो पेंशन भी नहीं मिलती। वहीं धीरे-धीरे अक्षम होता शरीर उम्रदराज होने पर लगने वाली बीमारियों का घर बन जाता है। ऐसे स्थिति में अपने जब मां-बाप की देखभाल न करें तो यह एक सामाजिक अपराध ही कहा जाएगा। जाहिर है, जब खून के रिश्ते साथ न दें तो कानून ही अंतिम सहारा रह जाता है। इस दिशा में तेलंगाना विधानसभा में पारित तेलंगाना कर्मचारी जवाबदेही और माता-पिता सहायता निगरानी विधेयक 2026 पूरे देश के बुजुर्गों के लिये एक नई उम्मीद जगाता है। इस राज्य की विधानसभा ने बीते रविवार वरिष्ठ नागरिकों की वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह विधेयक पारित किया। निस्संदेह, देश में पहले से एक राष्ट्रीय कानून 'माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007' मौजूद है, लेकिन नये विधेयक का दायरा विस्तृत है। जो पहले कानून की कुछ विसंगतियों को दूर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि राज्य के नये विधेयक के दायरे में जनप्रतिनिधियों और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को भी शामिल किया गया है। यह विधेयक जन प्रतिनिधियों, सरकारी व निजी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य रूप से बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करना सुनिश्चित करता है।

तेलंगाना विधानसभा में पारित यह विधेयक यकीनी बनाता है कि यदि बच्चे मां-बाप की देखभाल नहीं करते तो उनके वेतन से पंद्रह फीसदी या दस हजार रुपये, जो भी कम है, शिकायत मिलने पर माता-पिता को देय राशि के रूप में काटे जाएंगे। उल्लेखनीय है कि अपनी चल-अचल संपत्ति बेटे के नाम करने वाले मशहूर कारोबारी विजयपत सिंघानिया की बेदखली का एक मामला चर्चा में आया था। इस घटना ने पूरे देश का ध्यान खींचा और देश में प्रभावी कानून बनाए जाने की चर्चा तेज हुई थी। यह सुखद ही है कि तेलंगाना सरकार ने सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए यह पहल की। सरकार का कथन है कि समाज में नैतिक दायित्वों को बढ़ावा देना इस विधेयक का मकसद है। यदि बच्चे अपना दायित्व नहीं निभाते तो कानून के जरिये उन्हें इसके लिये बाध्य किया जा सकेगा। इस विधेयक में प्रावधान है कि बच्चों द्वारा मां-बाप का भरण-पोषण न करने पर वे जिला कलेक्टर के सामने आवेदन कर सकेंगे। उल्लेखनीय है कि यह कानून न केवल सरकारी कर्मचारियों पर बल्कि निजी क्षेत्र के कर्मियों, सांसदों, विधायकों, मनोनीत सदस्यों तथा स्थानीय निकायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों पर भी लागू होगा। निश्चित रूप से भारतीय परिवार परंपरा में सदियों से गरिमापूर्ण स्थान रखने वाले माता-पिता के सम्मान व जीवन-यापन सुनिश्चित करने की दिशा में यह विधेयक एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। इस विधेयक में जहां कलेक्टर को नामित प्राधिकारी बनाया गया है, वहीं माता-पिता को भी संपत्ति के बंटवारे की स्थिति व आय की स्पष्ट जानकारी देनी होगी। ऐसे मामलों में माता-पिता तथा कर्मचारी को सुनवाई का मौका मिलेगा। कलेक्टर को साठ दिनों के भीतर शिकायत का निस्तारण करना होगा। फैसले के बाद कर्मचारी के वेतन से काटी गई राशि सीधे मां-बाप के खाते में जाएगी। उल्लेखनीय है कि केवल जैविक माता-पिता ही नहीं, सौतेले माता-पिता भी शिकायत करने के हकदार होंगे। इस विधेयक में इस बात का प्रावधान भी है कि इस बाबत शिकायतों की सुनवाई के लिये वरिष्ठ नागरिक आयोग का गठन किया जाएगा। उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आयोग के मुख्य आयुक्त के रूप में काम करेंगे। अर्ध न्यायिक शक्तियों वाले आयोग में प्रशासन व सामाजिक क्षेत्र के अनुभव वाले दो सदस्य भी होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह विधेयक वरिष्ठ नागरिकों के जीवन-यापन व सम्मान बहाली में सहायक होगा।

यूपीएससी परीक्षा के जुनून से प्रभावित शैक्षिक वातावरण

> “ देश में यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने के जुनून के कारण लाखों युवा मानसिक रूप से आहत हो रहे हैं और असफलता के दंश को भी झेल रहे हैं। वहीं इस परीक्षा के प्रति दीवानगी शैक्षणिक संस्कृति की गंभीरता पर भी असर डाल रही है।

हाल ही में, राष्ट्रीय राजधानी के एक अग्रणी महिला कॉलेज ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा-2025 में शीर्ष रैंक हासिल करने वाली अपनी दस पूर्व छात्राओं को सम्मानित किया। कॉलेज की प्रिंसिपल ने इन 'बदलाव के वाहकों' की सफलता गाथाओं का बखान किया, युवा छात्राओं को उनसे बातचीत करने अवसर मिला और उन 'गुरों' को सीखने का अवसर मिला, ताकि उन्हें भी इस अत्यंत प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए जरूरी महारत हासिल हो सके। यह जोड़ने की जरूरत नहीं कि इस किस्म के आयोजन, जैसा कि कॉलेज की प्रिंसिपल ने सोचा होगा, वर्तमान छात्राओं में गर्व की भावना जगाने और उन्हें जीवन में अच्छा करने के लिए प्रेरित करने हेतु आवश्यक है। जहां मैं प्रिंसिपल और कॉलेज की इन दस पूर्व छात्राओं को बधाई देता हूं, वहीं मैं यह प्रार्थना करना नहीं भूलता कि ये 'सफल हस्तियां' अपने अहंकार पर काबू रख सकेंगी, विनम्र बनी रहेंगी,और अपने पदों से जुड़ी सत्ता और विशेषाधिकारों के मोहक जाल से खुद को दूर रखने का नैतिक साहस पा सकेंगी।

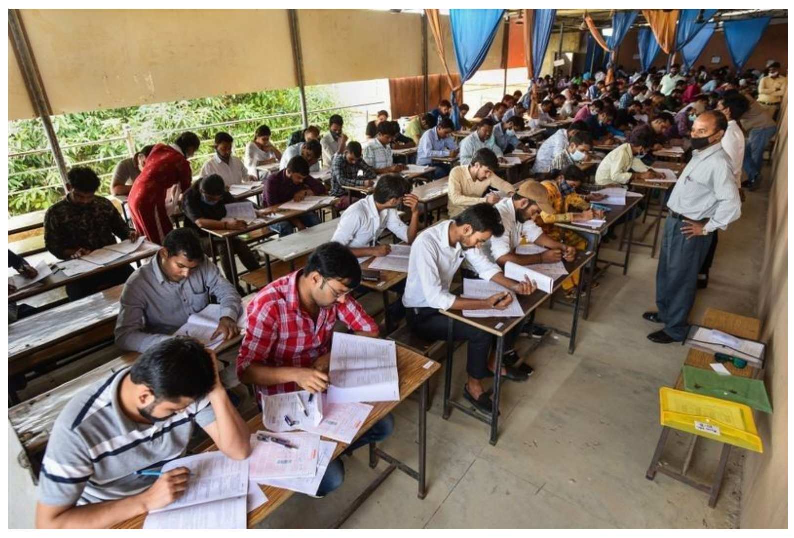

हालांकि, ज्ञान की राजनीति और समाजशास्त्र में मेरी गहरी रुचि के कारण, परेशान करने वाला एक प्रश्न मुझे कचोटता रहता है। ऐसा क्यों है कि उदार कला एवं मानविकी संकाय के लिए जाना जाने वाला एक कॉलेज अपनी हैसियत सिद्ध करने के लिए यूपीएससी टॉपर्स को प्रदर्शित करने पर विवश है? मैं खुद से पूछता हूं क्या कॉलेज को अपनी इन पूर्व छात्राओं पर तब भी उतना ही गर्व होता, यदि उन्होंने जीवन का कोई बिल्कुल अलग मार्ग चुना होता—मसलन, छत्तीसगढ़ और झारखंड के आदिवासियों के बीच काम करने वाली एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में; या अपने छात्रों में आलोचनात्मक सोच के विकास की कोशिश करने वाली एक स्कूल शिक्षिका के रूप में; अथवा, इस संदर्भ में, अपने-अपने ज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान देने वाली किसी इतिहासकार/ राजनीतिक सिद्धांतकार/ मनोवैज्ञानिक के रूप में?

इस बात को स्वीकार करें। हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जिसने 'सफलता' और 'असफलता' की अपनी अलग अवधारणा गढ़ रखी है। कोई आश्चर्य नहीं कि शिक्षा का उद्देश्य अक्सर सफलता और असफलता को उपयोगिता के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। मसलन, यदि आप विज्ञान विषय चुनते हैं, तो आपको बार-बार यही कहा जाता है कि आपको डॉक्टर या इंजीनियर ही बनना है। या, इसी क्रम में, यदि आप मानविकी और सामाजिक विज्ञान चुनते हैं, तो आपका तब तक उद्धार नहीं हो सकता, जब तक आप यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा पास करके आईएएस/ आईपीएस अधिकारी नहीं बन जाते! दरअसल, जिस तरह मध्यम-वर्गीय परिवार सफलता को लेकर प्रचलित इस सोच को आत्मसात कर लेते हैं, या फिर शिक्षा की यांत्रिक उपयोगिता ने युवाओं के लिए जीवन के अन्य रास्ते सोचना और उनके लिए कोशिश करना बेहद मुश्किल कर दिया है। इसलिए, समझा जा सकता है उदार कला एवं मानविकी विषय के लिए विख्यात कोई कॉलेज यूपीएससी टॉपर्स को अपना रोल मॉडल क्यों मानता है।

तथापि, यह अहसास होना भी उतना ही ज़रूरी है कि सफलता को लेकर समाज द्वारा बनाई गई ऐसी सोच ने जिस चीज़ को जन्म दिया है, उसका नामकरण मैं 'यूपीएससी के जुनून की बीमारी' करना चाहूंगा—जिस तरह इसने 3000 करोड़ का भारी मुनाफा कमाने वाला 'कोचिंग उद्योग' खड़ा कर दिया है, अनगिनत युवा दिमागों की महत्त्वपूर्ण एवं रचनात्मक ऊर्जा को खत्म कर डाला है, और हमारे कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सक्रियता व सहभागितापूर्ण शिक्षण और शोध की भावना को नुकसान पहुंचाया है। भले ही हमें 'सफलता' गाथाएं सुनना भाता है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आईएएस/ आईपीएस/ संबद्ध सेवाओं के लिए इस एकतरफ़ा और जुनून-भरी दीवानगी की वजह से, हम लाखों युवाओं को मानसिक रूप से आहत होते और 'असफलता' का दंश झेलते हुए देख रहे हैं। आख़िरकार, आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं, अगर मान लीजिए, दस लाख आवेदकों में से सिर्फ़ एक हज़ार खुशकिस्मत लोगों को ही इन प्रतिष्ठित नौकरियों के लिए चुना जाता है? जहां एक ओर 'सफलता' का जश्न मनाया जाता है और उसकी जय-जयकार होती है वहीं दूसरी तरफ हम असफलता की पीड़ा भुला देते हैं। हो सकता है कि कोई युवा एक स्कूल शिक्षक, मानव-विज्ञानी, खिलाड़ी या फ़िल्म-निर्माता के तौर पर बहुत अच्छा कर सकता है। लेकिन, यूपीएससी के प्रति जुनून की वजह से उसकी जवानी का एक बड़ा हिस्सा कोचिंग सेंटरों के चक्कर लगाने, भारी मात्रा में पैसे खर्च करने, और इतिहास, समसामयिक घटनाक्रम, समाजशास्त्र और राजनीतिक सिद्धांत के उन सभी 'नोट्स' को रटने में बर्बाद हो जाता है, जिन्हें 'कोचिंग गुरु' बड़े धूम-धड़ाके से बेचते हैं और रातों-रात करोड़पति बन जाते हैं। सच में, यह शिक्षा की स्थिति और हमारे युवा छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर एक दुखद टिप्पणी है।

इसी तरह, हरेक समझदार शिक्षाविद आपको बताएगा कि यूपीएससी के प्रति यह दीवानगी हमारे कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अकादमिक संस्कृति की गंभीरता को नष्ट कर रही है। यूपीएससी की तैयारी करने वाले आम छात्र के लिए, ज्ञान की गहराई मायने नहीं रखती, बल्कि वह चीज़ मायने रखती है जिसे कोचिंग इंडस्ट्री 'सफलता के मैनुअल' यानी नुस्खे के तौर पर बेचती है। तब वह नियमित रूप से स्कूल कक्षा में क्यों जाए, मूल किताबें क्यों पढ़े, 5000 शब्दों का एक कठिन निबंध लिखने की कला क्यों सीखे, और सेमिनार एवं चर्चाओं में क्यों हिस्सा ले, जब उसका एकमात्र मकसद सिर्फ़ डिग्री हासिल करना हो, और वह मुख्य फोकस उन चीज़ों पर रखे जो इन प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए 'उपयोगी' हैं? यह संकट, आईआईटी-जेईई और एनईईटी जैसे मानकीकृत परीक्षाओं के प्रति जुनून और कोचिंग सेंटरों पर बढ़ती निर्भरता के कारण पैदा हुए 'डमी स्कूलों' के चलन से, मूलतः अलग नहीं है। हमारे कई कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में खाली कक्षाएं देखना कोई असंभव बात नहीं, जबकि आईएएस कोचिंग सेंटरों का कारोबार कई गुणा तेज़ी से बढ़ रहा है।

जिस कॉलेज का मैंने ज़िक्र कर किया, मुझे यकीन है, उसकी प्रिंसिपल भी यूपीएससी के प्रति दीवानगी के पीछे की बीमारी से अच्छी तरह वाकिफ़ होंगी। फिर भी, मैं उनकी मजबूरी समझता हूं। आखिरकार, इस बाज़ार-चालित व बेहद प्रतिस्पर्धी दौर में, किसी भी कॉलेज/ विश्वविद्यालय को लगातार अपनी 'रैंकिंग', प्रतिष्ठा एवं ग्लैमर, और अपनी 'ब्रांड' वैल्यू के बारे में सोचना पड़ता है। यह भी समझता हूं कि पूर्व छात्रों की उपलब्धियों-खासकर अगर वे 'सफलता' की प्रचलित धारणाओं को और मज़बूत करती हों-को अक्सर नए छात्रों और उनके पैरेंट्स को आकर्षित करने के लिए बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया और प्रचारित किया जाता है।

फिर भी, इन तमाम मजबूरियों के बावजूद, किसी भी कॉलेज/ विश्वविद्यालय को यह अहसास होना चाहिए कि उसका मुख्य काम आलोचनात्मक सोच से युक्त अकादमिक उत्कृष्टता, लोकतांत्रिक नागरिकता की भावना को बढ़ावा देने, और युवा छात्रों के दिमाग को पुरातनपंथी सोच से मुक्त करना है, ताकि वे मुख्यधारा की 'सफलता' की धारणाएं-जैसे आईएएस अधिकारी की नौकरी, या किसी कॉर्पोरेट कंपनी में शानदार 'सैलरी पैकेज' वाली नौकरी-से परे देख सकें, और एक सक्रिय, जागरूक, ज्ञानवान और दयालु नागरिक के तौर पर वे चाहे जो भी काम करें, उसी में कोई अर्थ और उद्देश्य खोज सकें।

प्रेरणा

आज़ादी का सम्मान: जब तलवार ने सोने को चुनौती दी

मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसे अनेक क्षण आते हैं, जब किसी राष्ट्र को यह तय करना पड़ता है कि वह अपने अस्तित्व की रक्षा किस प्रकार करेगा—क्या वह भय और समझौते का मार्ग अपनाएगा, या साहस और स्वाभिमान के साथ संघर्ष करेगा। यही वे क्षण होते हैं, जो किसी समाज के चरित्र, उसकी आत्मा और उसकी आने वाली पीढ़ियों की दिशा को निर्धारित करते हैं। प्राचीन रोम की एक घटना इस सत्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है, जहां एक युवा की निर्भीक आवाज़ ने पूरे राष्ट्र की सोच को बदल दिया।

एक समय की बात है, जब रोम अपनी समृद्धि, अनुशासन और शक्ति के कारण विश्व के प्रमुख नगरों में गिना जाता था। उसकी भव्यता और वैभव की चर्चा दूर-दूर तक होती थी। लेकिन एक दिन ऐसा आया, जब एक शक्तिशाली शत्रु ने अचानक उस पर आक्रमण कर दिया। दुश्मन की सेना विशाल थी और उसने रणनीतिक रूप से पूरे शहर को चारों ओर से घेर लिया। इस अचानक हुए हमले से रोम के नागरिकों में भय और असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई।

शहर के भीतर जीवन जैसे ठहर सा गया। लोग अपने घरों में सिमट गए, बाजार सूने पड़ गए और हर चेहरे पर चिंता की रेखाएं साफ दिखाई देने लगीं। यह केवल एक सैन्य संकट नहीं था, बल्कि यह एक मानसिक और भावनात्मक संकट भी था, जिसमें लोगों का आत्मविश्वास डगमगा रहा था। ऐसे समय में रोम के प्रमुख नेताओं और सभासदों ने एक सभा बुलाई, ताकि इस संकट का समाधान खोजा जा सके।

सभा में कई तरह के विचार सामने आए। कुछ लोगों का मानना था कि दुश्मन से सीधा युद्ध करना आत्मघाती साबित हो सकता है, क्योंकि उसकी शक्ति अधिक प्रतीत हो रही थी। लंबे विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि यदि दुश्मन को पर्याप्त मात्रा में सोना, चांदी और बहुमूल्य रत्न दे दिए जाएं, तो शायद वह बिना युद्ध किए ही लौट जाए और शहर को विनाश से बचाया जा सके।

यह निर्णय सुनकर कई लोगों को राहत मिली, क्योंकि उन्हें लगा कि इससे खून-खराबे से बचा जा सकता है। लेकिन यह राहत अस्थायी थी, क्योंकि इसके पीछे एक गहरी असहायता और आत्मसमर्पण की भावना छिपी हुई थी। फिर भी आदेश का पालन करते हुए पूरे शहर में घोषणा कर दी गई कि सभी नागरिक अपने पास की कीमती वस्तुएं जमा करें।

धीरे-धीरे लोग अपने घरों से सोना, गहने और अन्य बहुमूल्य वस्तुएं लेकर आने लगे। एक स्थान पर बड़ी तराजू लगाई गई और उस पर इन वस्तुओं को तौला जाने लगा। देखते ही देखते वहां सोने का एक विशाल ढेर इकट्ठा हो गया। यह दृश्य एक ओर रोम की समृद्धि को दर्शाता था, तो दूसरी ओर उसकी विवशता और आत्मसम्मान के संकट को भी उजागर करता था।

इसी बीच वहां एक युवा पहुंचा, जिसकी आंखों में तेज और चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। उसने जब यह दृश्य देखा, तो उसके भीतर एक गहरी पीड़ा और आक्रोश उत्पन्न हुआ। उसे यह स्वीकार्य नहीं था कि उसका राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता को धन के बदले सौंप दे। वह तेजी से आगे बढ़ा और बिना कुछ कहे अपनी तलवार निकालकर तराजू पर जोर से फेंक दी। उसकी इस क्रिया से वहां उपस्थित सभी लोग चौंक गए। कुछ क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। फिर उस युवक ने ऊंचे स्वर में कहा, “क्या हम इतने कमजोर हो गए हैं कि अपनी आज़ादी को सोने के बदले तौल रहे हैं? क्या यही हमारी वीरता है? क्या हम अपने पूर्वजों की उस विरासत को भूल गए हैं, जिसे उन्होंने अपने खून और बलिदान से स्थापित किया था?”

उसके शब्दों में ऐसी शक्ति थी, जिसने हर व्यक्ति के हृदय को झकझोर दिया। उसने आगे कहा, “यदि आज हम डरकर अपने शत्रु को धन दे देंगे, तो वह कभी हमारा सम्मान नहीं करेगा। वह बार-बार हमारे सामने आएगा और हर बार हमें झुकने के लिए मजबूर करेगा। यह केवल एक बार का समझौता नहीं होगा, बल्कि यह हमारी स्थायी कमजोरी बन जाएगा।”

युवक ने कुछ क्षण रुककर वहां खड़े अन्य युवाओं की ओर देखा और दृढ़ स्वर में कहा, “सच्ची स्वतंत्रता कभी खरीदी नहीं जाती, उसे अपने साहस और बलिदान से अर्जित किया जाता है। यदि हमें अपने राष्ट्र की रक्षा करनी है, तो हमें डरकर नहीं, बल्कि डटकर उसका सामना करना होगा। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपनी आज़ादी के लिए किसी भी बलिदान के लिए तैयार हैं।”

उसकी यह प्रेरणादायक पुकार सुनकर वहां उपस्थित युवकों के भीतर एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। उनके मन में जो भय था, वह धीरे-धीरे समाप्त होने लगा और उसकी जगह आत्मविश्वास ने ले ली। उन्होंने एक स्वर में उस युवक का साथ देने का निर्णय लिया। देखते ही देखते यह भावना पूरे शहर में फैल गई। जो लोग पहले समझौते के पक्ष में थे, वे भी अब अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने लगे। उन्हें यह एहसास हुआ कि धन देकर प्राप्त की गई शांति केवल एक भ्रम है, जो किसी भी समय टूट सकता है। इसके विपरीत, अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए किया गया संघर्ष ही स्थायी सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करता है।

अब रोम में एक नया जोश और उत्साह था। सैनिकों ने अपने अस्त्र-शस्त्र तैयार कर लिए और आम नागरिक भी अपने-अपने स्तर पर सहयोग करने लगे। शहर का वातावरण पूरी तरह बदल चुका था—जहां पहले भय था, वहां अब साहस और आत्मविश्वास था।

जब दुश्मन सेना को यह ज्ञात हुआ कि रोम के लोग अब समझौता करने के बजाय युद्ध के लिए तैयार हैं, तो उसने भी अपनी रणनीति बदल दी। जल्द ही दोनों सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध शुरू हो गया। रणभूमि में तलवारों की टकराहट और सैनिकों के साहस ने इस युद्ध को ऐतिहासिक बना दिया।

रोमन सैनिकों ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह किए बिना शत्रु का सामना किया। उनके भीतर अपने देश के प्रति प्रेम और कर्तव्य की भावना थी, जिसने उन्हें अजेय बना दिया। अंततः उनकी दृढ़ता और साहस के सामने दुश्मन टिक नहीं सका और उसे पराजित होकर पीछे हटना पड़ा।

इस प्रकार रोम ने अपनी स्वतंत्रता को बचा लिया। यह केवल एक युद्ध की जीत नहीं थी, बल्कि यह उनके आत्मसम्मान, एकता और साहस की विजय थी। इस पूरे घटनाक्रम में जिस युवक ने लोगों के भीतर सोई हुई चेतना को जगाया, वह वीर केमीलियस था, जिसने अपने विचारों और नेतृत्व से पूरे राष्ट्र को एक नई दिशा दी।

नक्सलवाद की समाप्ति की घोषणा के बाद भी बहुत कुछ करना होगा

काफी पहले केंद्र सरकार ने घोषणा की थी कि मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद समाप्त हो जाएगा। मार्च 2026 की अवधि से एक दिन पहले ही गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में बड़ी घोषणा की। नक्सलवाद पर चर्चा के दौरान गृह मंत्री ने कहा कि देश में नक्सलवाद अब लगभग समाप्त हो चुका है। आदिवासी इलाकों में असली न्याय पहुंचा है। उन्होंने कहा कि यह बदलाव अचानक नहीं आया, बल्कि 2014 के बाद केंद्र सरकार की सख्त नीति, सुरक्षा अभियान और विकास योजनाओं के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि सरकार नकसल प्रभावित क्षेत्र में तेजी से विकास करा रही है। शिक्षा के लिए स्कूल और उपचार के लिए वहां अस्पताल खुल रहे हैं। अमित शाह ने कहा कि नक्सलवाद की जड़ें खत्म हो रही हैं और आदिवासियों की आवाज अब संसद तक पहुंची है। उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि उसने समस्या को बढ़ने दिया। मोदी सरकार के फैसलों से हालात बदले हैं। उन्होंने कहा कि नक्सल विचारधारा आदिवासियों को गुमराह करती है और अब देश नक्सलवाद मुक्त बनने की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने साफ कहा कि सरकार ने नक्सलियों से बातचीत नहीं, बल्कि उन्हें खत्म कर विकास को आगे बढ़ाने का रास्ता चुना। उन्होंने कहा कि जो हथियार उठाएगा, उसे कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्होंने दावा किया कि नक्सलियों का पूरा केंद्रीय नेतृत्व, पोलित ब्यूरो और कमेटी अब खत्म हो चुकी है। काफी मारे गए, बहुतों ने सरेंडर किया। कुछ अभी फरार हैं।

शाह ने कहा कि देश अब नक्सलमुक्त होने की स्थिति में पहुंच चुका है। उन्होंने बताया कि कई बड़े ऑपरेशन जैसे बुढ़ा, थंडरस्टॉर्म और ब्लैक फॉरेस्ट चलाए गए। इनमें भारी मात्रा में हथियार, आईईडी फैक्ट्री और अनाज बरामद हुआ। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़, तेलंगाना और ओडिशा के बड़े इलाके अब नक्सल प्रभाव से बाहर आ चुके हैं। सुरक्षा बलों और स्थानीय पुलिस की भूमिका को उन्होंने अहम बताया।

केंद्रीय गृहमंत्री ने बताया कि आजादी के समय देश संसाधनों की कमी और विकास की चुनौतियों से जूझ रहा था। कई दूर-दराज के इलाकों तक सरकार की पहुंच नहीं थी, सड़कों और सुविधाओं का अभाव था। ऐसे हालात में कुछ संगठनों ने इन कमजोरियों का फायदा उठाया। जहां राज्य की पकड़ कम थी, उन्हीं इलाकों को रेड कॉरिडोर बनाया गया। भोले-भाले आदिवासियों को भेदभाव और शोषण के नाम पर भड़काया गया और उनके हाथों में हथियार थमा दिए गए। हकीकत यह है कि इन क्षेत्रों में योजनाबद्ध भेदभाव नहीं, बल्कि विकास की कमी थी, जिसका इस्तेमाल कर हिंसा को बढ़ावा दिया गया।

शाह ने बताया कि केंद्र सरकार ने ऑल एजेंसी अप्रोच अपनाई। इसमें सीएपीएफ, राज्य पुलिस और खुफिया एजेंसियों के बीच तालमेल बढ़ाया गया। फंडिंग और स्पोर्ट सिस्टम पर प्रहार किया गया। सरेंडर नीति लागू की गई। इसमें आत्मसमर्पण करने वालों को आर्थिक मदद और पुनर्वास दिया गया। उन्होंने कहा कि सरकार ने हर गांव तक अपनी पहुंच बनाई, इससे नक्सलवाद कमजोर हुआ।

उन्होंने दावा किया कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर विकास हुआ। हजारों किलोमीटर सड़कें बनीं, मोबाइल टावर लगाए गए, बैंक, एटीएम और डाकघर खोले गए। शिक्षा के लिए एकलव्य स्कूल, आईटीआई और कौशल केंद्र बनाए गए। उन्होंने कहा कि विकास ही नक्सलवाद खत्म करने का सबसे बड़ा कारण बना।

शाह ने कहा कि नक्सलवाद गरीबी से नहीं, बल्कि विचारधारा से पैदा हुआ। उन्होंने कहा कि यह विचारधारा लोकतंत्र में विश्वास नहीं करती और बंदूक के जरिए सत्ता चाहती है। उन्होंने यह भी कहा कि आदिवासियों को बरगलाकर उनके हाथ में हथियार दिए गए और विकास को रोका गया।

गृह मंत्री ने कहा कि सरकार आगे भी सख्ती और विकास दोनों पर काम जारी रखेगी। उन्होंने आदिवासी समाज को भरोसा दिलाया कि उनकी सुरक्षा और विकास सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अब देश बंदूक से नहीं, संविधान से चलेगा और यही असली जीत है। गृह मंत्री के अनुसार, जिस “रेड कॉरिडोर” का विस्तार कभी पशुपति से तिरुपति तक माना जाता था, वह अब सिमटकर केवल कुछ जिलों तक रह गया है। 2014 में जहाँ 126 जिले वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित थे, वहीं 2025-26 तक यह संख्या घटकर मात्र एक अंक में रह गई है। छत्तीसगढ़ का बस्तर संभाग, जो कभी नक्सलियों का अभेद्य किला माना जाता था। अब वह सुरक्षा बलों के नियंत्रण में है और वहां विकास की किरणें पहुँच रही हैं।

सरकार के इन दावों की पुष्टि जमीनी आंकड़ों से भी होती है। पिछले कुछ वर्षों में नक्सली हिंसा की घटनाओं में 70 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। सुरक्षा बलों की शहादत के आंकड़ों में भी भारी गिरावट दर्ज की गई है। “ऑपरेशन कगार” और “ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट” जैसे लक्षित अभियानों के माध्यम से सुरक्षा बलों ने नक्सली नेतृत्व की कमर तोड़ दी है। 2025 के दौरान ही 300 से अधिक नक्सली मारे गए। इनमें कई शीर्ष कमांडर शामिल थे। इसके साथ ही, हजारों की संख्या में कैडरों ने आत्मसमर्पण किया है,। यह समर्पण इस बात का प्रतीक है कि अब इस विचारधारा का आकर्षण खत्म हो रहा है। इतना सब होने के बावजूद, इन सफलताओं के बावजूद नक्सलवाद की चुनौतियां पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। सबसे बड़ी चुनौती भौगोलिक विषमता है। छत्तीसगढ़ के अबूझमाड़ जैसे घने वन क्षेत्र आज भी सुरक्षा बलों के लिए कठिन परीक्षा बने हुए हैं। नक्सलियों ने अपने पैर पीछे जरूर खींचे हैं, लेकिन वे पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। वे अक्सर घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियों का लाभ उठाकर छापामार हमले करने की ताक में रहते हैं। इसके अलावा, “अर्बन नक्सलिज्म” या वैचारिक उग्रवाद एक नई चुनौती बनकर उभरा है। शहरों में बैठे कुछ बौद्धिक समूह नक्सलियों को वैचारिक और रसद सहायता प्रदान करते हैं।

अभियान

दिव्य उद्गम की ओर: यमुनोत्री से आरंभ होती आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की महान यात्रा

भारतीय संस्कृति में तीर्थयात्रा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने और आत्मा की शुद्धि का माध्यम मानी जाती है। यह वह पवित्र मार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य अपने भीतर के विकारों को त्यागता है और परमात्मा के सान्निध्य की ओर अग्रसर होता है। अनादिकाल से चली आ रही चार धाम यात्रा इसी आध्यात्मिक साधना का सर्वोच्च स्वरूप मानी जाती है, जिसमें यमुनोत्री धाम का स्थान प्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल यात्रा का आरंभिक पड़ाव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, भक्ति और मोक्ष की दिशा में उठाया गया पहला सशक्त कदम है। प्राचीन काल में यह मान्यता थी कि चार धाम यात्रा जीवन के अंतिम चरण में, जब व्यक्ति वानप्रस्थ या संन्यास की अवस्था में प्रवेश करता है, तब करनी चाहिए। उस समय यह यात्रा आत्मा को संसार के बंधनों से मुक्त करने का एक साधन मानी जाती थी। किंतु समय के परिवर्तन के साथ यह सोच भी बदली है। आज यह यात्रा हर आयु वर्ग के लोगों के लिए खुली है। युवा, वृद्ध, परिवार और यहां तक कि बच्चे भी इस पवित्र यात्रा में भाग लेकर आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। आधुनिक परिवहन और सुविधाओं ने इस कठिन यात्रा को अपेक्षाकृत सरल बना दिया है, जिससे लाखों श्रद्धालु हर वर्ष इस दिव्य अनुभव का हिस्सा बनते हैं।

उत्तराखंड की देवभूमि में स्थित यमुनोत्री धाम हिमालय की गोद में बसा हुआ एक अद्भुत तीर्थ स्थल है। यह उत्तरकाशी जिले की बड़कोट तहसील में समुद्र तल से लगभग दस हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित है। चारों ओर बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाएं, हरे-भरे वन और स्वच्छ जलधाराएं इस स्थान को अलौकिक बनाती हैं। यहां पहुंचते ही मनुष्य के भीतर एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है, मानो वह सांसारिक जीवन के कोलाहल से दूर किसी दिव्य लोक में प्रवेश कर गया हो। यमुनोत्री धाम का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। यह वह स्थान है, जहां यमुना नदी का पृथ्वी पर अवतरण माना जाता है। यद्यपि यमुना का वास्तविक उद्गम कालिंद ग्लेशियर और एक बर्फ से जमी झील है, जो मंदिर से कुछ किलोमीटर ऊपर स्थित है, फिर भी मंदिर परिसर को ही मुख्य तीर्थ स्थल माना जाता है। यहां यमुना जी की पूजा दो रूपों में की जाती है—एक प्राकृतिक नदी के रूप में और दूसरा मंदिर में स्थापित देवी के विग्रह के रूप में। यह द्वैत रूप हमें यह सिखाता है कि ईश्वर और प्रकृति एक ही सत्य के दो रूप हैं।

धार्मिक ग्रंथों में यमुना को भक्ति और मुक्ति प्रदान करने वाली देवी के रूप में वर्णित किया गया है। वे भगवान सूर्य की पुत्री और यमराज की बहन हैं। इस कारण उनका संबंध जीवन और मृत्यु दोनों से जुड़ा हुआ है, जो एक गहरे दार्शनिक सत्य की ओर संकेत करता है कि जीवन और मृत्यु एक ही चक्र के दो पहलू हैं। यमुना का वाहन कछुआ माना जाता है, जो धैर्य, संयम और स्थिरता का प्रतीक है। यह हमें यह शिक्षा देता है कि आत्मशुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपने इंद्रियों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। यमुनोत्री का उल्लेख स्कंद पुराण, कूर्म पुराण और अन्य प्राचीन ग्रंथों में विस्तार से मिलता है। इन ग्रंथों के अनुसार यह स्थान ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा है। महर्षि असित का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने इस स्थान को खोजकर यहां अपना आश्रम स्थापित किया और अपना सम्पूर्ण जीवन तपस्या में व्यतीत किया। कहा जाता है कि वे प्रतिदिन गंगा और यमुना दोनों में स्नान करते थे, लेकिन वृद्धावस्था में जब यह संभव नहीं रहा, तब दोनों नदियां स्वयं उनके आश्रम के समीप प्रकट हुईं। यह कथा इस स्थान की दिव्यता और आध्यात्मिक शक्ति को दर्शाती है। यमुनोत्री क्षेत्र में स्थित गर्म जल के कुंड इस स्थान की एक विशेष पहचान हैं। इनमें सूर्यकुंड सबसे अधिक प्रसिद्ध है, जहां श्रद्धालु चावल या आलू को कपड़े में बांधकर पकाते हैं और इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। यह दृश्य अत्यंत अद्भुत होता है, क्योंकि एक ओर हिमालय की ठंडी हवाएं बह रही होती हैं और दूसरी ओर गर्म जल में भोजन पक रहा होता है। यह प्रकृति के रहस्यों और ईश्वर की लीला का एक अनूठा संगम है।

चार धाम यात्रा का आध्यात्मिक महत्व अत्यंत व्यापक है। यह केवल तीर्थ स्थलों के दर्शन का क्रम नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है, जो मनुष्य को धीरे-धीरे आत्मबोध की ओर ले जाती है। यमुनोत्री से यात्रा का आरंभ होता है, जहां भक्ति का बीज बोया जाता है। इसके बाद गंगोत्री में ज्ञान की प्राप्ति होती है, केदारनाथ में वैराग्य की अनुभूति होती है और अंत में बदरीनाथ में मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यह यात्रा जीवन के चार प्रमुख आध्यात्मिक चरणों का प्रतिनिधित्व करती है।

अक्षय तृतीया का पर्व यमुनोत्री धाम के लिए विशेष महत्व रखता है। इसी दिन मंदिर के कपाट ग्रीष्मकाल के लिए खोले जाते हैं। यह दिन भारतीय संस्कृति में अत्यंत शुभ माना जाता है और इसे नए कार्यों के आरंभ के लिए सर्वोत्तम समय माना जाता है। कपाट खुलने के साथ ही हजारों श्रद्धालु इस पवित्र धाम की ओर प्रस्थान करते हैं और अपनी आध्यात्मिक यात्रा का शुभारंभ करते हैं।

आज के आधुनिक युग में, जहां जीवन की गति अत्यंत तेज हो गई है और मनुष्य लगातार तनाव और मानसिक दबाव से जूझ रहा है, ऐसे में यमुनोत्री धाम जैसी पवित्र स्थली एक आध्यात्मिक आश्रय के रूप में उभरती है। यह स्थान केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन प्राप्त करने का माध्यम भी है। यहां आकर मनुष्य अपने भीतर झांकता है, अपने विचारों को शुद्ध करता है और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने का प्रयास करता है।

यमुनोत्री हमें यह सिखाता है कि सच्चा सुख और शांति बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर निहित है। जब हम भक्ति, श्रद्धा और संयम के साथ जीवन जीते हैं, तो हम उस परम सत्य के करीब पहुंचते हैं, जिसे मोक्ष कहा जाता है। यह धाम हमें यह भी याद दिलाता है कि प्रकृति और आध्यात्मिकता का गहरा संबंध है, और दोनों का संरक्षण और सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

अंततः, यमुनोत्री धाम केवल एक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा का आरंभ है, जो मनुष्य को आत्मशुद्धि, भक्ति और मोक्ष की ओर ले जाती है। यह वह स्थान है, जहां से जीवन के वास्तविक अर्थ की खोज शुरू होती है और जहां हर श्रद्धालु अपने भीतर एक नई चेतना, नई ऊर्जा और नई दिशा प्राप्त करता है। यही इस पावन धाम की सबसे बड़ी विशेषता है, जो इसे युगों-युगों से आस्था का केंद्र बनाए हुए है और भविष्य में भी इसे उसी श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजनीय बनाए रखेगी।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

वर्तमान वैश्विक अस्थिरता के बीच 'सम्राट संप्रति संग्रहालय' समग्र मानवता के लिए महत्वपूर्ण : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

गांधीनगर स्थित श्री महावीर जैन आराधना केंद्र में 'सम्राट संप्रति संग्रहालय' का भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से मंगलवार को गांधीनगर स्थित जैन आराधना केंद्र, कोबा में भगवान महावीर जन्म कल्याणक के शुभ अवसर पर भारतीय विरासत के गौरव तथा जैन संस्कृति को समर्पित विश्व स्तरीय भव्य 'सम्राट संप्रति संग्रहालय' का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर राष्ट्र संत जैनाचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी, राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सम्राट संप्रति संग्रहालय का लोकार्पण करते हुए कहा कि वर्षों से कोबा जैन तीर्थ के सान्निध्य में अध्ययन, साधना तथा आत्मानुशासन की परंपराएं विकसित हुई हैं। यहां मूल्यों के जतन, संस्कारों के संवर्धन तथा ज्ञान के पोषण की 'त्रिवेणी' संगम का सृजन होता है, जो भारतीय सभ्यता की नींव है। इस त्रिवेणी को अविरत प्रवाहित रखना हम सबका सामूहिक दायित्व है। प्रधानमंत्री ने बलपूर्वक कहा कि भारत की समृद्ध विरासतें अब जैन हेरिटेज म्यूजियम द्वारा आने वाली सदियों के लिए सहेजी जा रही हैं, जो नई पीढ़ी को निरंतरण प्रेरणा देती रहेंगी। यह म्यूजियम जैन दर्शन, भारतीय संस्कृति तथा हमारी प्राचीन विरासत का पवित्र केंद्र है।

प्रधानमंत्री ने इस संग्रहालय के सृजन में सहयोग देने वाले सभी जैन मुनियों तथा समर्पित नागरिकों को अभिनंदन दिया। उन्होंने सम्राट संप्रति के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि कई संस्कृतियों ने महान चिंतक तथा दार्शनिक दिए हैं। जब सवाल सत्ता और सत्य का होता है, तब अनेक शासकों ने सत्ता लालसा के लिए आदर्शों तथा मूल्यों को नजरअंदाज किया था, जिससे विचार एवं व्यवहार के बीच खाई बढ़ी थी। उन्होंने कहा कि सम्राट संप्रति न केवल ऐतिहासिक राजा थे, बल्कि भारत के दर्शन तथा अभ्यास को जोड़ने वाले सेतु थे।

श्री नरेन्द्र मोदी ने संग्रहालय की भव्यता के बारे में कहा कि यहां स्थित सात दीर्घाएँ राष्ट्र की विविधता तथा सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती हैं। इनमें नवपद यानी अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, दर्शन, ज्ञान, चरित्र तथा तप के साथ तीर्थंकरों की कथाओं और उपदेशों को कलात्मक रूप से जीवंत किया गया है। उन्होंने कहा कि जब ज्ञान सम्यक् होता है, तब वह समभाव तथा सेवा की नींव बनता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह संग्रहालय जैन विरासत के साथ भारत की वैदिक, बौद्ध तथा अन्य परंपराओं का भी गौरवपूर्वक प्रतिनिधित्व करता है। संग्रहालय में वेद, पुराण, आयुर्वेद योग तथा दर्शन की समन्वयपूर्वक प्रस्तुति सभी परंपराओं के मेघधनुष को एक साथ प्रस्तुत करती है। यह केवल भारत में ही हो सकता है।

वर्तमान वैश्विक अस्थिरता तथा अशांति का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस संग्रहालय में स्थापित विरासत तथा संदेश केवल भारत के लिए ही नहीं, अपितु समग्र मानवता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अनुरोध किया कि विश्वभर से अधिकतम जिज्ञासु आगंतुक, विद्यार्थी तथा रिसर्चर इस संग्रहालय की यात्रा पर आएं और वे भारत तथा जैन धर्म के शांति के उपदेशों को विश्व के कोने-कोने तक ले जाएं।

उन्होंने कहा कि तक्षशिला तथा नालंदा जैसी देश की प्राचीन विद्यापीठें लाखों पांडुलिपियों-हस्तप्रतों से भरी हुई थीं, जिनको विदेशी आक्रमणकारों द्वारा धार्मिक संकीर्णता से प्रेरित होकर नष्ट कर दिया गया। उस मुश्किल समय में शेष बची हस्तप्रतों को सामान्य लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहेज कर रखा था। आचार्य भगवंत श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब ने उन हस्तप्रतों की खोज में पदविहार कर देश के कोने-कोने में 60 वर्ष बिताए। उन्होंने कहा कि ताड़पत्रों तथा भोजपत्रों पर लिखित तीन लाख से अधिक हस्तप्रतें, जिनमें से कुछ सैकड़ों वर्ष पुरानी हैं, इस संग्रहालय में सुरक्षित ढंग से संग्रहीत हैं; जो भारत के अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के लिए प्रेरक स्मारक समान हैं। हस्तप्रतों के जतन के लिए सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकारों की तुलना में वर्तमान सरकार द्वारा टेक्नोलॉजी का उपयोग कर प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटलाइजेशन, वैज्ञानिक ढंग से संरक्षण, स्कैनिंग, केमिकल ट्रीटमेंट तथा डिजिटल आर्काइविंग के लिए 'ज्ञान भारतम मिशन' शुरू किया गया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने 'मन की बात' में इस संबंध में उल्लेख किया था, जिसके परिणामस्वरूप नागरिक अपने पास संरक्षित हस्तप्रतें अपलोड करने में सक्षम बने। उन्होंने कहा कि यह अभियान देश के हर कोने में बिखरी हस्तप्रतें एकत्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज देश की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करने, उसे समझने और प्रदर्शित करने के प्रयास प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार तथा तीर्थस्थानों के विकास से लेकर आयुर्वेग व योग के प्रचार तक हर स्तर पर चल रहे हैं। उन्होंने लोथल स्थित विश्व के सबसे बड़े भव्य मैरीटाइम म्यूजियम, वडनगर स्थित म्यूजियम तथा दिल्ली में 'युगे युगीन भारत म्यूजियम' आदि महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स का उल्लेख किया। उन्होंने आगे कहा कि पहली बार भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे इतिहास को राजनीतिक पूर्वाग्रह से मुक्त रूप से बाहर लाने के लिए अर्थपूर्ण तथा व्यापक कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा, "हमने विरासत को राजनीतिक लेंस से देखने की मानसिकता को समाप्त किया है और हम 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र के साथ आगे बढ़ रहे हैं, जो विकसित भारत के विजन की आत्मा है।"

प्रधानमंत्री ने भारत की विरासत के संरक्षण के लिए संतों के अथक प्रयासों की प्रशंसा की और दिल्ली में ऐतिहासिक 'नवकार महामंत्र दिवस' कार्यक्रम का स्मरण किया, जहां जैनों के चारों फिरके एकत्र हुए थे। उन्होंने उस अवसर पर दिए गए 9 संकल्पों का उल्लेख करते हुए कहा कि पानी बचाना, एक पेड़ मां के नाम, स्वच्छता अभियान, वोकल फॉर लोकल, देश दर्शन, प्राकृतिक खेती, स्वस्थ जीवनशैली, योग एवं खेल-कूद, गरीबों की मदद करना और 10वां संकल्प जो समुदाय द्वारा ही जोड़ा गया है, वह भारत की विरासत का जतन करना शामिल है।

प्रधानमंत्री ने अपनी विशिष्ट शैली में कहा कि आज भगवान महावीर स्वामी के जन्म दिवस पर कोबा स्थित कार्यक्रम में महान सांस्कृतिक परंपराएं, भव्य भूतकाल, उसके साथ आचमन लिया और साणंद में जाकर विश्व की अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी चिप्स के निर्माण का उद्घाटन हो रहा है, सेमीकंडक्टर का उद्घाटन हो रहा है । यहाँ जड़ों से जुड़ना है और वहाँ से जग से जुड़ना है और यह सब गुजरात तथा भारत की धरती पर हो रहा है, जो हमारे लिए गौरव समान है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

सम्राट संप्रति संग्रहालय के लोकार्पण अवसर पर महावीर स्वामी की जयंती पर उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र के साथ हमारी संस्कृति, धर्म और विरासत के गौरव की परंपरा को स्थापित किया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में यह वर्ष भारत के गौरव और स्वाभिमान के पुनर्जागरण का वर्ष है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के ऐतिहासिक उत्सव के माध्यम से एक हजार वर्ष की अटल आस्था और पुनरुत्थान की यात्रा को याद करते हुए, प्रधानमंत्री की प्रेरणा से एक बार फिर भारतीय संस्कृति का गौरव पूरी दुनिया में झलका है। उनके नेतृत्व में धर्म, आस्था और सनातन संस्कृति का संरक्षण और विरासतों का गौरव हो रहा है, यह भारत विरासत महोत्सव इसी का एक और प्रमाण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 'ज्ञान भारतम् मिशन' लॉन्च करके लाखों प्राचीन पाण्डुलिपियों के डिजिटलीकरण और संरक्षण का महान काम किया है। प्राकृत और पाली भाषा में संग्रहित किया गया जैन साहित्य गहन विचारों का एक खजाना है। प्रधानमंत्री ने पाली और प्राकृत भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देकर जैन साहित्य के अमूल्य ग्रंथों का संरक्षण किया है। इतना ही नहीं, उनकी प्रेरणा से संसद के प्रवेशद्वार पर सम्मेद शिखर का चित्रण हो या विदेशी धरती से प्राचीन तीर्थंकरों की मूर्तियों को देश में वापस लाने की बात हो, ऐसी अनेक सफलताओं से उन्होंने जैन दर्शन को उजागर किया है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म केवल ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि बहुत ही गहन और हरेक काल में प्रासंगिक भी है। वर्तमान समय में महावीर स्वामी के विचार ही दुनिया को शांति का मार्ग दिखा सकते हैं। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि 'सम्राट संप्रति म्यूजियम', जिसका आज प्रधानमंत्री ने लोकार्पण किया है, वह जैन धर्म, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत की जीवंत झलक दिखलाने वाला एक दर्शनीय स्थान बनेगा। कोबा जैन तीर्थक्षेत्र के विशाल क्षेत्र में निर्मित इस म्यूजियम में लगभग दो हजार से अधिक दुर्लभ प्राचीन अवशेषों, पाण्डुलिपियों और कलात्मक नमूनों को प्रदर्शित किया गया है। मुख्यमंत्री ने इस म्यूजियम को आधुनिक स्थापत्य के साथ हमारी विरासत को जीवंत रखने वाला एक महत्वपूर्ण केंद्र बताया और कहा कि यह केवल एक संग्रहालय नहीं है, बल्कि जैन धर्म के तत्त्व ज्ञान और आध्यात्मिक के बीच का एक मजबूत सेतु भी है, जो इतिहास और आध्यात्मिक अनुभूति को जोड़ता है। यहां जैन धर्म के विकास को सात गैलरियों में कालक्रम के अनुसार प्रदर्शित किया गया है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि यह स्थल वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए जैन धर्म के मूल्यों और संस्कृति को चिरंजीव रखने की प्रेरणा देने वाला केंद्र बनेगा।
मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गत वर्ष प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के अवसर पर देश भर में नवकार महामंत्र के आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि जैन प्रार्थना का केंद्र नवकार मंत्र पवित्र स्वरों का संचय है, ऊर्जा स्थिरता और प्रकाश का लयबद्ध प्रवाह है। प्रधानमंत्री ने इस नवकार महामंत्र के दिन राष्ट्र विकास के लिए नागरिक हित के नौ संकल्प दिए थे। ये नौ संकल्प जैन धर्म के सिद्धांतों और सामंजस्यपूर्ण भविष्य की दृष्टि से आज भी बहुत ही सुसंगत हैं। हम सभी इन नौ संकल्पों को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं। उन्होंने प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में विकसित भारत 2047 के निर्माण के लिए विरासत के गौरव और सम्मान के साथ विकसित गुजरात बनाने की मंशा व्यक्त की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

- ▸▸ कोबा जैन तीर्थ यानी मूल्यों के जतन, संस्कारों के संवर्धन तथा ज्ञान के पोषण का 'त्रिवेणी संगम'
- ▸▸ सम्राट संप्रति महाराजा भारत के दर्शन तथा अभ्यास को जोड़ने वाले सेतु समान थे
- ▸▸ टेक्नोलॉजी का उपयोग कर प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटलाइजेशन के लिए 'ज्ञान भारतम मिशन' शुरू किया गया
- ▸▸ महावीर स्वामी के जन्म दिवस पर कोबा में आयोजित कार्यक्रम जड़ों से जुड़ने का, जबकि साणंद में आयोजित कार्यक्रम सेमीकंडक्टर के जरिये जगत से जुड़ने का

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- ▸▸ 'सम्राट संप्रति म्यूजियम' भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक विरासत की जीवंत झांकी दर्शाने वाला एक दर्शनीय स्थान
- ▸▸ वर्तमान समय में महावीर स्वामी के विचार ही विश्व को शांति की राह दिखा सकते हैं
- ▸▸ सम्राट संप्रति म्यूजियम की आध्यात्मिक चेतना अयोध्या तथा सोमनाथ की तरह विश्व में भारत की विरासत का गौरव बढ़ा रही है

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने इस अवसर पर कहा कि भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक दुनिया भर के जैनों के लिए सबसे बड़ा उत्सव है। इस पावन अवसर पर तीर्थधाम में प्रधानमंत्री के करकमलों से 'सम्राट संप्रति म्यूजियम' का लोकार्पण विशेष आनंद प्रदान करता है। यह भारत की सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने वाली एक महान घटना है। इस म्यूजियम में प्रदर्शित की गईं सुंदर कलाकृतियां, जैन तीर्थंकरों की मनोहर प्रतिमाएं, वेद, पुराण, आयुर्वेद और हजारों वर्षों प्राचीन पाण्डुलिपियां हमारी आध्यात्मिक चेतना का संगम है।

श्री संघवी ने कहा कि श्री पद्मसागर सूरीश्वर जी महाराज ने दशकों तक पदविहार करके इस विरासत का निर्माण किया है। वास्तव में यह हमारी संस्कृति की रक्षा का महायज्ञ है। इस म्यूजियम में जैन समाज की संस्कृति और संस्कारों को भव्य रूप से निर्मित किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट किया है कि युवाओं के हाथ में टेक्नोलॉजी के साथ ही मुख एवं मन में नवकार मंत्र के संस्कार भी होने चाहिए। यह म्यूजियम हमें वही मार्ग दिखाएगा। सम्राट संप्रति म्यूजियम की आध्यात्मिक चेतना प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अयोध्या और सोमनाथ की तरह दुनिया में भारत की विरासत का गौरव बढ़ा रही है।

श्री संघवी ने विशेष रूप से इस बात का उल्लेख किया कि सरकार का हमेशा यह प्रयास रहा है कि पर्वताधिराज शत्रुंजय पर्वत जैसी आध्यात्मिक भूमि पर, जहां गुरु भगवंत वर्षों से विहार करते आए हैं, वहां जैन समाज के लिए सुविधाएं और मजबूत हों। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने तीर्थधामों पर 'तीर्थ वन' बनाने की शुरुआत की थी। आज पालीताणा और गिरिराज पर्वत की पवित्रता को बनाए रखने के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात सरकार हमेशा कटिबद्ध है। श्री संघवी ने सभी को बधाई देते हुए कहा कि यह म्यूजियम संस्कार और शिक्षा का केंद्र बनेगा।

इस अवसर पर आचार्य पद्मसागर सूरीश्वर जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अपने भव्य अतीत के गौरव को वर्तमान बना रहा है। देश का सौभाग्य है कि नरेन्द्र मोदी जैसा चरित्रवान, निष्ठावान और लक्ष्य को साथ रखकर चलने वाला प्रधानमंत्री मिला है। प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए श्रेष्ठ योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री में साधु और गृहस्थ के गुणों का समन्वय देखने को मिलता है। भारत की राजगद्दी दिल्ली में अनेक शासक आए और चले गए, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शासन की कमान संभालने के साथ-साथ लोगों के दिलों पर भी राज किया है। भयंकर युद्ध हो या कोरोना जैसी महामारी, प्रधानमंत्री के सटीक मार्गदर्शन से आज देश का नागरिक और विरासत सुरक्षित हैं।

श्री महावीर जैन आराधना केंद्र के अध्यक्ष और टोरेंट ग्रुप के चेयरमैन श्री सुधीर मेहता ने स्वागत भाषण में कहा कि भगवान महावीर ने दुनिया को 'जिओ और जीने दो' का संदेश दिया है, तब इस भव्य म्यूजियम के लोकार्पण का स्वर्णिम इतिहास लिखा गया है। प्रधानमंत्री के प्रयासों से गत 10-12 वर्षों के दौरान 400 से अधिक प्राचीन और दुर्लभ मूर्तियों को विदेश से भारत की धरती पर वापस लाकर भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने का भगीरथ काम हुआ है। उन्होंने कहा कि दुनिया का सबसे बड़ा यह म्यूजियम केवल प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेजों का खजाना है, जिसमें लगभग 3 लाख से अधिक पाण्डुलिपियां सुरक्षित रखी गई हैं, जो हम सभी के लिए गौरव की बात है।

इस अवसर पर जैन साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं, समाज श्रेष्ठियों, और विधायकों सहित कई महानुभाव उपस्थित रहे।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा गुजरात में 891 करोड़ के महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं का राष्ट्र को समर्पण एवं नई रेल सेवा का शुभारंभ,उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छ क्षेत्रों में सुदृढ़ कनेक्टिविटी से आर्थिक एवं सामाजिक विकास को नई गति

आधुनिक, समावेशी एवं सशक्त रेल अवसंरचना के माध्यम से विकसित गुजरात की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने गुजरात दौरे के दौरान 31 मार्च 2026 को राज्य में रेल अवसंरचना को सुदृढ़ करने हेतु 891 करोड़ के महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं का लोकार्पण एवं राष्ट्र को समर्पण किया। इन परियोजनाओं में खेडब्रह्मा-हिम्मतनगर रेल लाइन का लोकार्पण तथा खेडब्रह्मा–हिम्मतनगर–अहमदाबाद (असारवा) नई रेल सेवा का शुभारंभ, गांधीधाम–आदीपुर रेल लाइन के मल्टी-ट्रैकिंग एवं कानालुस–जामनगर रेल लाइन के दोहरीकरण का राष्ट्र को समर्पण शामिल हैं। ये सभी परियोजनाएँ गुजरात राज्य के विभिन्न क्षेत्रों—उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छ—को सशक्त कनेक्टिविटी प्रदान करते हुए राज्य के समग्र विकास को नई गति दे रही हैं।

इस अवसर पर खेडब्रह्मा स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती शोभनाबेन बारैया - माननीय सांसद-साबरकांठा, श्रीमती रमीलाबेन बारा - माननीय सांसद-राज्यसभा, श्री विनेन्द्रसिंह झाला - माननीय विधायक-हिम्मतनगर सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे । इसी प्रकार इडर स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में श्री रमणलाल वोरा माननीय विधायक–इडर गणमान्य उपस्थित रहे।

इसी प्रकार गांधीधाम स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में श्री त्रिकमभाई छांगा - माननीय राज्य मंत्री, उच्च और तकनीकी शिक्षा, गुजरात, श्री कांतिलाल अमृतिया - माननीय श्रम, कौशल विकास और रोजगार मंत्री, गुजरात एवं श्री अनिरुद्धभाई दवे - माननीय विधायक-मांडवी एवं अतिथिगण उपस्थित रहे।

खेडब्रह्मा-हिम्मतनगर रेल लाइन एवं खेडब्रह्मा–हिम्मतनगर–अहमदाबाद नई रेल सेवा: उत्तर गुजरात के समावेशी विकास की दिशा में ऐतिहासिक कदम

साबरकांठा जिले में 55 किलोमीटर लंबी खेडब्रह्मा-हिम्मतनगर ब्रॉडगेज रेल लाइन का निर्माण कार्य पूर्ण होकर जनता को समर्पित किया जा चुका है। लगभग 482 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस रेल लाइन ने उत्तर गुजरात के दूरस्थ, आदिवासी एवं सीमावर्ती क्षेत्रों को सीधे रेल नेटवर्क से जोड़ते हुए विकास की नई राह खोल दी है। इसके साथ ही खेडब्रह्मा–हिम्मतनगर–अहमदाबाद (असारवा) के मध्य नई रेल सेवा के शुभारंभ से इस क्षेत्र की कनेक्टिविटी और अधिक सुदृढ़ हुई है।

इस परियोजना से:

- ▸▸ हिम्मतनगर, ईडर, वडाली, खेडब्रह्मा, पोशीना एवं विजयनगर जैसे क्षेत्रों को तेज, सुरक्षित एवं सुलभ रेल कनेक्टिविटी प्राप्त होगी
- ▸▸ खेडब्रह्मा से प्रसिद्ध अंबाजी धाम तक की यात्रा अब और अधिक सरल और सुगम हो जाएगी, जिससे श्रद्धालुओं को एक ही मार्ग में प्रमुख तीर्थस्थलों के दर्शन का लाभ मिल सकेगा। खेडब्रह्मा, जिसे प्राचीन "ब्रह्मक्षेत्र" के रूप में जाना जाता है, अब रेल कनेक्टिविटी से जुड़कर एक महत्वपूर्ण धार्मिक गंतव्य के रूप में उभर रहा है। ब्रह्मा मंदिर एवं आसपास के आदिवासी धार्मिक स्थलों के कारण यह क्षेत्र एक प्रमुख आस्था केंद्र है, जहाँ पहुँचना अब अधिक सरल एवं सुविधाजनक होगा, जिससे धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा
- ▸▸ इडर, अपने ऐतिहासिक किले, प्राचीन मंदिरों एवं प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। बेहतर रेल संपर्क के माध्यम से इडर क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा तथा स्थानीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों तक यात्रियों की पहुँच अधिक सुगम एवं सुविधाजनक हो जाएगी
- ▸▸ हिम्मतनगर, जो एक प्रमुख सिरेमिक एवं औद्योगिक केंद्र है, जहाँ एशियन ग्रेनिटो, एडिसन सैनिटो, ओरेकल, केथोस, एक्सारो, सोनाटा और सेंचुरी टाइल्स जैसी इकाइयाँ संचालित हैं तथा यह शहर तराजू उद्योग के लिए भी प्रसिद्ध है, साथ ही शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र होने के कारण इस परियोजना से औद्योगिक परिवहन एवं जन-आवागमन दोनों को लाभ मिलेगा, जिससे क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को गति मिलेगी
- ▸▸ साबरकांठा जिले के निवासियों को अहमदाबाद एवं उदयपुर तक सीधा रेल संपर्क प्राप्त होगा, जिससे यात्रा अधिक सुगम होगी
- ▸▸ किसानों, व्यापारियों एवं स्थानीय उद्योगों को बाजार से बेहतर जुड़ाव मिलेगा, जिससे व्यापार एवं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा तथा रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे
- ▸▸ इस 55 किलोमीटर लंबे रेल मार्ग पर ट्रेनों के संचालन से यात्रियों, व्यापारियों एवं श्रद्धालुओं को आवागमन में समग्र रूप से सुविधा प्राप्त होगी

गांधीधाम–आदिपुर रेल लाइन मल्टी-ट्रेकिंग: कच्छ क्षेत्र में व्यापार, बंदरगाह और लॉजिस्टिक गतिविधियों को सुदृढ़ समर्थन

▸▸ कच्छ जिले में स्थित गांधीधाम–आदिपुर रेल खंड मल्टी-ट्रेकिंग कार्य पूर्ण कर राष्ट्र को समर्पित किया जा चुका है। लगभग 11 किलोमीटर लंबी इस परियोजना पर लगभग 152 करोड़ रुपये की लागत आई है।

इस परियोजना के माध्यम से:

- ▸▸ दीनदयाल बंदरगाह (कंडला पोर्ट) से जुड़े इस व्यस्त रेल मार्ग पर क्षमता बढ़ने से भीड़ कम होगी और ट्रेनों का संचालन तेज व अधिक भरोसेमंद होगा
- ▸▸ गांधीधाम–अदीपुर क्षेत्र के उद्योगों, लॉजिस्टिक पार्कों और विशेष आर्थिक क्षेत्रों तक बेहतर रेल कनेक्टिविटी मिलेगी
- ▸▸ बंदरगाह से आयात-निर्यात का माल जल्दी बाहर भेजा जा सकेगा, जिससे समय और खर्च दोनों कम होंगे
- ▸▸ कच्छ के किसानों और कृषि से जुड़े उद्योगों को अपनी उपज, नमक आदि सस्ते और जल्दी बाजार तक पहुंचाने में मदद मिलेगी
- ▸▸ अधिक ट्रेनें चल सकेंगी, जिससे क्षेत्र का विकास बढ़ेगा और गुजरात के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा होगा
- ▸▸ कंटेनर, नमक, पेट्रोलियम, ऑयल एवं लुब्रिकेंट्स (POL), उर्वरक, कोयला, बेंटोनाइट एवं अन्य वस्तुओं की ढुलाई अब अधिक कुशलता, तीव्रता एवं सुव्यवस्थित ढंग से सुनिश्चित की जा सकेगी
- ▸▸ गांधीधाम, कच्छ क्षेत्र का एक प्रमुख माल ढुलाई केंद्र है, जो पूरे देश में व्यापारिक गतिविधियों को गति देता है। आदिपुर इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण यात्री केंद्र है, जो स्थानीय लोगों के दैनिक जीवन को सुगम बनाता है।

कानालुस–जामनगर रेल लाइन का दोहरीकरण: सौराष्ट्र के औद्योगिक और पर्यटन विकास को नई गति

▸▸ कानालुस–जामनगर रेल लाइन के दोहरीकरण का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर राष्ट्र को समर्पित किया जा चुका है। लगभग 27 किलोमीटर लंबी इस परियोजना पर लगभग 257 करोड़ रुपये की लागत आई है।

इस परियोजना से:

- ▸▸ रेल मार्ग की क्षमता में वृद्धि हुई होगी और दोनों दिशाओं में ट्रेनों का संचालन अधिक सुचारु होगा
- ▸▸ जामनगर के औद्योगिक क्षेत्रों, विशेषकर रिफाइनरी एवं पेट्रोकेमिकल उद्योगों को बेहतर परिवहन सुविधा मिलेगी
- ▸▸ द्वारका जैसे धार्मिक स्थलों तक पहुंच आसान होने से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा
- ▸▸ कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा और किसानों को अपनी उपज जल्दी बाजार तक पहुंचाने में मदद मिलेगी
- ▸▸ जामनगर, जो सौराष्ट्र क्षेत्र का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है, राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वहीं कानालुस जंक्शन, जो विभिन्न रेल मार्गों को जोड़ने वाला एक रणनीतिक बिंदु है, अब और अधिक सक्षम होकर पूरे क्षेत्र में रेल संचालन को सुगम बना रहा है।

सशक्त रेल कनेक्टिविटी से विकसित गुजरात की ओर अग्रसर भारत

- ▸▸ इन सभी परियोजनाओं और नई रेल सेवा के माध्यम से गुजरात राज्य में रेल नेटवर्क अधिक मजबूत, आधुनिक और सक्षम हुआ है। उत्तर गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ जैसे क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी से औद्योगिक विकास, कृषि प्रगति, पर्यटन संवर्धन और सामाजिक समावेशन को नई गति मिली है।
- ▸▸ भारतीय रेल की यह पहल "जनसुविधा, क्षेत्रीय संतुलन और आर्थिक सशक्तिकरण" के लक्ष्य को साकार करते हुए गुजरात को एक विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर राज्य बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।
- ▸▸ यह उपलब्धि न केवल गुजरात, बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक कदम है।

राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा उप मुख्यमंत्री ने गुजरात यात्रा पर पधारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का अहमदाबाद हवाई अड्डे पर ऊष्मापूर्ण स्वागत किया

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी मंगलवार को जब गुजरात की एक दिवसीय यात्रा पर पधारे; तब अहमदाबाद हवाई अड्डे पर राज्यपाल आचार्य देवव्रत, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने उनका ऊष्मापूर्ण स्वागत किया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल्ल पानसेरिया, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, जीएडी की अपर मुख्य सचिव श्री अंजू शर्मा, राज्य के प्रभारी पुलिस महानिदेशक श्री के. एल. एन. राव, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त श्री जी. एस. मलिक, मेजर जनरल श्री गौरव बग्गा तथा अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार ने भी प्रधानमंत्री का अभिवादन कर स्वागत किया।

पश्चिम रेलवे विविध राजस्व में 1,350 करोड़ का रिकॉर्ड बनाया

पश्चिम रेलवे द्वारा विविध राजस्व सृजन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान विविध राजस्व के रूप में अब तक की सर्वाधिक आय 1,350 करोड़ दर्ज किया गया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 23% की सुदृढ़ वृद्धि को दर्शाती है तथा लगातार तीसरे वर्ष 1,000 करोड़ के आंकड़े को पार करने का रिकॉर्ड भी स्थापित करती है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, विविध राजस्व में मुख्य परिवहन सेवाओं के अतिरिक्त स्रोतों से प्राप्त आय शामिल होती है। पश्चिम रेलवे का यह उत्कृष्ट प्रदर्शन राजस्व स्रोतों के विविधीकरण, परिसंपत्तियों के सर्वोत्तम उपयोग तथा गैर-किराया आय के साधनों को सुदृढ़ करने पर निरंतर फोकस को दर्शाता है। इस राजस्व में प्रमुख योगदान प्रॉपर्टी डेवलपमेंट, भूमि एवं भवन किराया, वे-लीव शुल्क, साइडिंग रखरखाव शुल्क, विज्ञापन, पार्किंग तथा कैटरिंग से प्राप्त आय का है।

भारत के सेमीकंडक्टर मिशन को मिला नया सामर्थ्य : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से साणंद में 3300 करोड़ रुपए के 'केन्स सेमीकॉन' ओएसएटी प्लांट का शुभारंभ

▶▶ ग्लोबल सेमीकंडक्टर हब के रूप में उभरा साणंद, 'केन्स सेमीकॉन' ओएसएटी प्लांट की दैनिक 63 लाख चिप उत्पादन क्षमता
▶▶ टेक फ्यूचर का टर्निंग पॉइंट : प्रधानमंत्री के करकमलों से गुजरात में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम के नए युग का प्रारंभ
▶▶ देश को ग्लोबल सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम की 'ड्राइविंग सीट' तक पहुंचाने में गुजरात अग्रसर

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को अहमदाबाद जिले के साणंद से केन्स सेमीकंडक्टर ओएसएटी फैसिलिटी का शुभारंभ कराते हुए कहा कि यह 'डिकेड' यानी दशक भारत का 'टेकेड' है। उन्होंने कहा कि आज भारत ने तकनीकी क्षेत्र में जो नई पहलें की हैं, वे आगामी दशकों में वैश्विक स्तर पर देश के नेतृत्व को और मजबूत बनाएंगी।
वैश्विक बाजार में भारत के आज एक विश्वसनीय सेमीकंडक्टर सप्लायर के रूप में उभर रहे होने का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने जोड़ा कि साणंद में तैयार हुई चिप्स अमेरिका पहुंच कर समग्र विश्व को प्रकाशित करेंगी। सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत का वर्तमान वैश्विक मार्केट 4.5 लाख करोड़ रुपए का है, जिसे वर्ष 2030 तक 9 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचाने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी का यह कालखंड केवल आर्थिक प्रतिस्पर्धा का समय नहीं है, बल्कि भविष्य के टेक लैंडस्कैप को आकार देने का समय है। परिणामस्वरूप; वर्ष 2021 में भारत में सेमीकंडक्टर मिशन का प्रारंभ किया गया था। यह केवल एक औद्योगिक नीति नहीं है, अपितु वैश्विक स्तर पर भारत के आत्मविश्वास की उद्घोषणा है। उन्होंने जोड़ा कि आज का नया भारत केवल बदलाव का साक्षी नहीं है, बल्कि इस बदलाव का नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ रहा है।
इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, राज्य के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया भी उपस्थित रहे।
गुजरात की एक दिवसीय यात्रा पर पधारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने साणंद में केन्स सेमीकॉन की अत्याधुनिक आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओएसएटी) फैसिलिटी का उद्घाटन कर देश के सेमीकंडक्टर मिशन को नया सामर्थ्य प्रदान किया है।
साणंद जीआईडीसी में लगभग 3300 करोड़ रुपए की लागत से तैयार हुआ यह प्लांट भारत के सेमीकंडक्टर मिशन अंतर्गत एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा। प्रधानमंत्री ने प्लांट का लोकार्पण करने के बाद सुविधाओं का सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण किया। उन्होंने केन्स के युवा इंजीनियरों के साथ संवाद कर उन्हें प्रोत्साहन प्रदान किया। प्रधानमंत्री के करकमलों से एक और प्लांट का शुभारंभ होने से गुजरात में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम के नए युग का प्रारंभ हुआ है।
इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा केन्स के उपाध्यक्ष श्री रमेश कुन्हीकन्नन के करकमलों से केन्स सेमीकॉन द्वारा उनके एंकर कस्टमर 'अल्फा एंड ओमेगा सेमीकंडक्टर' के सीईओ श्री स्टीफन चांग को प्रोडक्ट प्रदान किया गया।
प्रधानमंत्री ने कहा कि गत महीने हमने माइक्रॉन प्लांट के प्रोडक्शन की शुरुआत की और आज केन्स टेक्नोलॉजी के प्लांट का प्रारंभ हो रहा है। यह केवल संयोग नहीं है, बल्कि इस बात का जीवंत प्रमाण है कि भारत का सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम कितनी तेजी से विकसित हो रहा है। उन्होंने कहा कि भारत की अपनी कंपनी केन्स अब ग्लोबल सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन का मजबूत हिस्सा बन गई है, जो प्रत्येक भारतवासी के लिए गौरव का क्षण है।
प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का दिन 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के मंत्र को सही अर्थ में चरितार्थ करता है। उन्होंने कहा कि साणंद तथा सिलिकॉन वैली के बीच आज एक नए सेतु का निर्माण हुआ है। यहां बनने वाले इंटेलिजेंट पावर मॉड्यूल्स अमेरिका की कंपनियों तक पहुंचेंगे और वहां से पूरी दुनिया को पावर देंगे। इस प्रोजेक्ट से भारत वैश्विक बाजार में एक विश्वसनीय सप्लायर के रूप में अपनी भूमिका और सशक्त कर रहा है।
सेमीकंडक्टर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर में आत्मनिर्भरता केवल एक चिप तक सीमित नहीं है; बल्कि वह एआई, इलेक्ट्रिक व्हीकल, क्लीन एनर्जी, डिफेंस तथा इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे अनेक क्षेत्रों में भारत की मजबूती की नींव है। आज देश के छह राज्यों में 1.60 लाख करोड़ रुपए की लागत से 10 बड़े प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है।
देश में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भविष्य के आयोजन का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि मिशन के प्रथम फेज की सफलता के बाद अब हमने 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0' की ओर कदम बढ़ाए हैं। हमारा प्रयास अब एक 'फुल स्टेक' भारतीय सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम तैयार करना है। भारत आज इंडस्ट्री-लेड रिसर्च तथा ट्रेनिंग सेंटर्स को प्रोत्साहन दे रहा है। बहुत ही कम समय में देश में 85 हजार से अधिक डिजाइन प्रोफेशनल्स तैयार करने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाएगा।
सेमीकंडक्टर क्षेत्र की अपार संभावनाओं की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस क्षेत्र में विद्यमान असीमित संभावनाओं के कारण दुनियाभर के निवेशकों में भारत के प्रति भारी उत्साह है। हमारा लक्ष्य हमारी आवश्यकता की अधिक से अधिक चिप्स भारत में ही बनाने का है।
क्रिटिकल मिनरल्स और उनकी सप्लाई चेन का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सुरक्षित सप्लाई चेन के लिए भारत ने 'नेशनल क्रिटिकल मिनरल्स मिशन' शुरू किया है। ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरलम जैसे तटीय राज्यों को जोड़कर 'रेयर अर्थ कॉरिडोर' के निर्माण की भी घोषणा की गई है। यह नेटवर्क माइनिंग, रिफाइनिंग और मैन्युफैक्चरिंग की एक मजबूत चेन बनाएगा, जो भारत को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करेगी।
टेक्नोलॉजी क्षेत्र में भारत की क्षमताओं पर विश्वास व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि एआई एडॉप्शन में भारत आज दुनिया में शीर्ष स्थान पर है। हमने स्पेस सेक्टर को प्राइवेट प्लेयर्स के लिए खोल दिया है और न्युक्लियर और क्वांटम कंप्यूटिंग पर मिशन मोड में काम कर रहे हैं। केन्स का यह प्लांट 'फैक्ट्री ऑफ दी वर्ल्ड' के रूप में भारत के सफर को और तेज बनाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

केन्स सेमीकॉन के ओएसएटी प्लांट के शुभारंभ अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात ने विकास की तेज गति पकड़ी है। आज साणंद में केन्स सेमीकंडक्टर प्लांट कार्यान्वित हुआ है, यह एक अनूठा मील का पत्थर साबित होगा। प्रधानमंत्री ने गत महीने साणंद स्थित माइक्रोन फैसिलिटी का उद्घाटन किया था और आज केन्स सेमीकंडक्टर प्लांट का शुभारंभ साणंद-धोलेरा को सिलिकॉन वैली बनाने की दिशा में एक विशेष कदम सिद्ध होगा।

केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव
▶▶ प्रधानमंत्री की विजनरी लीडरशिप में भारत ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र में टेक ऑफ कर लिया है
▶▶ भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वर्ष 2047 तक शीर्षस्थ तीन देशों में स्थान प्राप्त कर लेगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
▶▶ यह 'डिकेड' (दशक) भारत का 'टेकेड' है
▶▶ सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत का वर्तमान वैश्विक मार्केट 4.5 लाख करोड़ रुपए का, वर्ष 2030 तक 9 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचाने का लक्ष्य
▶▶ साणंद में तैयार हुई चिप्स अमेरिका पहुंच कर समग्र विश्व को प्रकाशित करेंगी

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
▶▶ सेमीकंडक्टर से एआई सहित इमर्जिंग सेक्टर में गुजरात को हब बनाने के लिए 'नमो गुजरात कौशल्य तथा रोजगार मिशन' के लिए राज्य के बजट में प्रावधान
▶▶ केन्स सेमीकंडक्टर प्लांट का शुभारंभ साणंद-धोलेरा को सिलिकॉन वैली बनाने की दिशा में विशिष्ट कदम सिद्ध होगा
▶▶ डिजिटल तथा टेक्नोलॉजी की क्रांति में भारत अग्रणी बने, उसमें सर्वोच्च योगदान देने के लिए गुजरात सक्षम एवं समर्थ

क `

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि केन्स प्रोजेक्ट को भारत सेमीकंडक्टर मिशन तहत 2024 में मंजूरी मिली थी, और आज यह कार्यान्वित हो रहा है, जो गुजरात की विकास की गति को साबित करता है।
गुजरात के युवाओं के सामर्थ्य का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे युवा सेमीकंडक्टर, एआई और डेटा सेंटर जैसी सुविधाओं के लिए कुशल वर्कफोर्स की आवश्यकता को पूरा करेंगे। इतना ही नहीं, एआई, सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन, रिन्यूएबल एनर्जी जैसे क्षेत्रों में गुजात को हब बनाने के प्रधानमंत्री के संकल्प को साकार करने के लिए राज्य सरकार ने वर्ष 2026-27 के बजट में 'नमो गुजरात कौशल्य तथा रोजगार मिशन' की भी घोषणा की है। इसके साथ ही, राज्य की यूनिवर्सिटियों में भी एडवांस मटेरियल सेंटर और सेमीकंडक्टर पाठ्यक्रमों के लिए भी प्रावधान किए गए हैं।
प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में साणंद और धोलेरा में तैयार हो रहे सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्लग एंड प्ले फैसिलिटी के लॉजिस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर भी तेजी से विकसित हो रहा है। डिजिटल और टेक्नोलॉजी की क्रांति में भारत को अग्रणी बनाने में गुजरात भी अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के साथ राज्य में
लिए सक्षम और समर्थ है। इतना ही नहीं, उन्होंने कहा कि गुजरात सेमीकंडक्टर क्षेत्र में विकास को प्रोत्साहन देने के लिए संकल्पबद्ध है और प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने के लिए 'विकसित भारत, विकसित गुजरात' के ध्येय मंत्र के साथ गुजरात आगे बढ़ रहा है।

केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केवल 14 महीने में केन्स सेमीकॉन प्लांट के शिलान्यास से लेकर वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो चुका है, जो एक रिकॉर्ड है। उन्होंने सेमीकंडक्टर क्षेत्र में गुजरात सरकार की सक्रियता की सराहना की।
केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र में टेक ऑफ कर लिया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वर्ष 2032 तक भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में दुनिया के शीर्ष 6 देशों में शामिल हो जाएगा और वर्ष 2047 तक शीर्ष 3 देशों में स्थान हासिल कर लेगा।
उन्होंने आगे कहा कि गुजरात में अब तक दो सेमीकंडक्टर प्लांट शुरू हो चुके हैं और वर्ष 2026 के अंत तक कुल चार प्लांट शुरू हो जाएंगे। जबकि वर्ष 2027 में दो और सेमीकंडक्टर प्लांट तथा वर्ष 2028 में धोलेरा में फैब प्लांट भी कार्यरत हो जाएगा। इस प्रकार, देश भर में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक इकोसिस्टम खड़ा हो रहा है।
श्री वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री का विजन है कि देश में सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए आवश्यक केमिकल्स, गैस और चिप बनाने की मशीनें आदि सभी का उत्पादन भारत में ही हो। उन्होंने कहा कि देश सेमीकंडक्टर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।
श्री वैष्णव ने कहा कि देश की 315 यूनिवर्सिटियों के 60,000 युवा इंजीनियरों ने सेमीकंडक्टर में प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। उन्होंने आगे कहा कि देश के युवा 2एमएम की सेमीकंडक्टर चिप की डिजाइन तैयार कर रहे हैं। देश में दुनिया की सबसे जटिल (कॉम्प्लेक्स) चिप की डिजाइन से लेकर वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो चुका है।
सेमीकंडक्टर प्लांट के उद्घाटन अवसर पर केन्स के सीईओ श्री रघु पणिक्कर ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजनरी नेतृत्व और इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन के सटीक रोडमैप के कारण भारत आज चिप मैन्युफैक्चरिंग के वैश्विक नक्शे पर गर्व के साथ उभरा है। उन्होंने 38 वर्ष पहले के संघर्ष को याद करते हुए कहा कि अतीत में स्पष्ट गाइडलाइन के अभाव में जो प्रतिभाएं विदेश पलायन कर गई थीं, वे आज सरकार की उद्योग-उन्मुख नीतियों और प्रोत्साहिक फंडिंग के कारण भारत में ही नए स्टार्टअप्स एवं कुशल वर्कफोर्स तैयार कर रही हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि 'भारत का आगमन हो चुका है' और पूरा इलेक्ट्रॉनिक इकोसिस्टम अब 'आईएसएम 2.0' (इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0) के नए युग में प्रवेश करने को तत्पर है।
उल्लेखनीय है कि केन्स की यह अत्याधुनिक आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली और टेस्ट (ओएसएटी) फैसिलिटी लगभग 63 लाख चिप्स की दैनिक उत्पादन क्षमता के साथ साणंद को ग्लोबल सेमीकंडक्टर हब के रूप में स्थापित करेगी तथा भारत की बढ़ती टेक्नोलॉजिकल जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस प्लांट के उद्घाटन के साथ गुजरात देश को ग्लोबल सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम की 'ड्राइविंग सीट' तक पहुंचाने में नेतृत्व कर रहा है।
भारत सरकार के सेमीकंडक्टर मिशन के अंतर्गत केंद्रीय कैबिनेट ने सितंबर 2024 में 'केन्स सेमीकॉन' ओएसएटी फैसेलिटी प्रोजेक्ट को मंजूरी दी थी। जिसका निर्माण कार्य रिकॉर्ड समय में पूरा कर देश और गुजरात की इंजीनियरिंग क्षमता का परिचय दिया है। यह प्लांट केवल चिप पैकेजिंग और टेस्टिंग की सुविधा ही नहीं देगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर हजारों युवाओं के लिए उच्च कौशल वाले रोजगार के अवसरों का भी निर्माण करेगा।
'केन्स सेमीकॉन' ओएसएटी प्लांट के उद्घाटन समारोह में स्थानीय विधायकों, उद्योग और खान विभाग की प्रधान सचिव सुश्री ममता वर्मा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव सुश्री पी. भारती, केन्स और अल्फा ओमेगा सेमीकंडक्टर के इंजीनियर, कर्मचारी, सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री से जुड़े सहभागी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

लापता तांत्रिक, ज्योतिषियों की शरारतें: घुड़सवारी समाज और महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े मुद्दे

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। भारत को जादूगरों का देश कहा जाता है। यह स्वाभाविक है कि आम लोग मंत्रों, तंत्र और भूत-प्रेतों में लिप्त तांत्रिकों के जादू के जाल में फंस जाते हैं, लेकिन जब पढ़े-लिखे लोगों के साथ-साथ राजनेता भी ऐसे ज्योतिषियों और तांत्रिकों के जाल में फंस जाते हैं, तो फिर दूसरों की बात ही क्या? अंततः, जब तांत्रिकों के रहस्य उजागर होते हैं, तो उन्हें सफाई देनी पड़ती है और उनका सार्वजनिक जीवन भी धूमिल हो जाता है। जो भविष्य में ऐसे राजनेताओं के सार्वजनिक जीवन में भी बाधा बन जाता है।
ऐसे ही शातिर तांत्रिक ज्योतिषियों का ताजा उदाहरण मुंबई के तथाकथित कामुक ज्योतिषी अशोक खेरात का मामला है। जिसमें उसने 58 से अधिक महिलाओं के साथ अत्याचार किए। इसे घिनौना कृत्य कहा जा सकता है और जब ऐसे घिनौने कृत्यों के अपराधियों का पर्दाफाश होता है, तो किसी भी बहन या बेटी की घटना को मीडिया में हत्या के रूप में दिखाना उचित नहीं है। इस मामले में अशोक खेरात की सिर पर छाता लेकर चलते हुए विवादित तस्वीर के कारण महाराष्ट्र महिला आयोग की अध्यक्ष बदनाम हुईं, जिसके चलते उन्हें महाराष्ट्र महिला आयोग के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा। इतना ही नहीं, महाराष्ट्र के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को भी अशोक खेरात के आश्रम जाने के बाद खुलासे करने पड़े।
तो यहाँ मुख्य बात यह है कि यह अच्छी बात है कि ऐसी नकली तांत्रिकों, ज्योतिषियों या पाखंडी बापूओं द्वारा पीड़ित कोई भी महिला, चाहे वह महिला हो या कोई और, जिसने ऐसे आश्रमों में चल रही गतिविधियों को करीब से देखा है, उसने समाज के हित में ऐसे नकली बाबाओं और तांत्रिकों के बारे में सच्चाई उजागर की है और मीडिया के माध्यम से जनता को जागरूक किया है।
लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी है। मीडिया जिस तरह से टीवी या अखबारों में खबरों को सनसनीखेज तरीके से पेश करता है और उनमें तस्वीरें जोड़ता है, अगर हम इसे समाज के हित में देखें तो यह जागरूकता पैदा करने के बजाय जनता के मन में गलत धारणाएं पैदा करता है। यह न केवल समाज के लिए शर्मनाक है, बल्कि ऐसी खबरें पुलिस जांच में भी बाधा बनती हैं। अंततः यह अपराधियों के लिए वरदान साबित होता है, जिससे पुलिस की मेहनत बेकार हो जाती है। इसका ताजा उदाहरण बाबा राम रहीम हैं, जो कई बार पैरोल पर रिहा होकर कानून का झंडा बुलंद कर रहे हैं।
अब बात करते हैं सनातनी हिंदू धर्म की। सनातनी हिंदू धर्म कभी भी स्त्री को धोखा देने और उसे अंधविश्वास का शिकार बनाने की शिक्षा नहीं देता, जहाँ तांत्रिक अनुष्ठानों के नाम पर स्त्री को नंगा किया जाता है, उसके साथ दुराचार किया जाता है, उसका जीवन बर्बाद किया जाता है, उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल की जाती है और समाज में स्त्री और उसके परिवार को कलंकित किया जाता है। तो फिर अशोक खेरात या बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री या राम रहीम और आसाराम क्यों नहीं? निर्दोष लोगों, राजनेताओं या फिल्म अभिनेताओं के साथ-साथ अन्य लोग भी ऐसे घोटालों के जाल में क्यों नहीं फंसते? उन्हें अब जागना चाहिए और समाज के हित में अंधविश्वास का पालन करने के लिए आगे आना चाहिए, यही समय की मांग है।
यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि चूंकि ऐसे तांत्रिक राजनेताओं के संरक्षण में होते हैं, इसलिए वे अभद्र भाषण देकर समाज में गुप्त आक्रोश फैलाते हैं। इसी आधार पर, ऐसे कामुक बाबा, बापू, ज्योतिषी और बाबा सरकारी खर्च पर सुरक्षा प्राप्त करते हैं, यह बहाना बनाकर कि उनकी जान को खतरा है और उन्हें धमकियां मिली हैं। अंततः यह खर्च जनता के कर के पैसे से ही पूरा होता है। इसके साथ ही, सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर प्रसारित हो रहे घृणित वीडियो को रोका जाना चाहिए ताकि माताओं और बेटियों के मन पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों को रोका जा सके और महिलाएं विकृत मानसिकता से दूर रह सकें। अंधविश्वास में विश्वास रखने वाले बड़े नेता ऐसे कामुक साधु-भाइयों की शरण लेते हैं। उन्हें टिकट मिलते हैं। उन्हें जीत का आशीर्वाद मिलता है और ऐसे घमंडी नेताओं को देखकर आम आदमी उनका अनुकरण करता है और अंततः समाज में बदनामी का शिकार होता है।
लेखक सनातन धर्म का प्रतिनिधि भी है और वह सनातन धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैलाने वाले किसी भी व्यक्ति का कड़ा विरोध करता है और करता रहेगा।

भावनगर रेलवे मंडल के TRD एवं TRO विभाग द्वारा मार्च माह में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

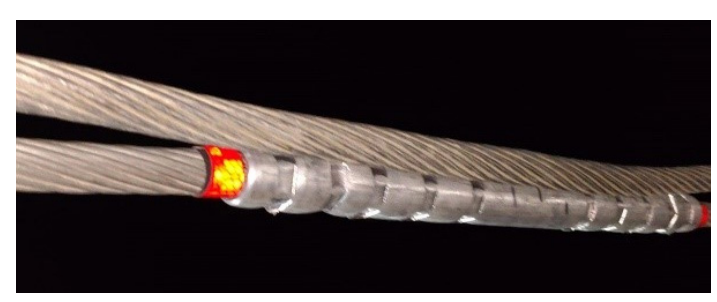

यात्रियों की सुरक्षा, विश्वसनीयता एवं सुचारु रेल संचालन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के TRD (Traction Distribution) एवं TRO (Traction Rolling Operation) विभागों द्वारा मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में मार्च 2026 के दौरान अनेक महत्वपूर्ण कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किए गए हैं। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार TRD विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँः

एंटी-मंकी डिवाइस की स्थापनाः
बोटाद–गांधीग्राम खंड में बंदरों के कारण बार-बार ट्रिपिंग की समस्या उत्पन्न हो रही थी। इस समस्या के समाधान हेतु इस खंड में एंटी-मंकी डिवाइस लगाए गए हैं, जिससे ट्रिपिंग की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है (39 से घटकर 18)।

फीडर कम्प्रेशन जॉइंट का प्रावधानः
भावनगर मंडल के सभी सेक्शनों में स्पाइडर टाइप फीडर जॉइंट्स को हटाकर कम्प्रेशन जॉइंट्स स्थापित किए गए हैं, जिससे ओवरहेड इक्विपमेंट (OHE) प्रणाली की विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है।

TRO विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँः
सतर्क लोको पायलटों द्वारा दुर्घटनाओं की रोकथामः
माह के दौरान सतर्क लोको पायलटों ने आपातकालीन ब्रेक का समय पर उपयोग कर संभावित दुर्घटनाओं को टाला। एक मामले में ट्रैक पर जलता हुआ पेड़ तथा अन्य दो मामलों में लेवल क्रॉसिंग से संबंधित खतरे (खुला गेट एवं रेड बैनर फ्लैग) पाए गए, जिनसे समय रहते बचाव किया गया।

सेक्शन वीडियो ग्राफी एवं सिग्नल व्याख्याः
क्रू की बेहतर ट्रेनिंग एवं सेक्शन की जानकारी बढ़ाने हेतु सिग्नल व्याख्या सहित सेक्शन वीडियो तैयार किए गए हैं, जिससे संचालन दक्षता में सुधार हुआ है।

वन्यजीव संरक्षण में योगदानः
मंडल के सतर्क क्रू द्वारा समय पर आपातकालीन ब्रेक लगाने से कुल 11 शेरों को सुरक्षित बचाया गया, जो रेलवे की सुरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
भावनगर मंडल के इन प्रयासों से न केवल रेल संचालन अधिक सुरक्षित एवं विश्वसनीय बना है, बल्कि वन्यजीव संरक्षण एवं तकनीकी उन्नयन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल हुई हैं।

पश्चिम रेलवे द्वारा आधुनिक पीएससी संरचना से पुरातन,पुल का उन्नयन कर सेफ्टी एवं स्थायित्व में वृद्धि

पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली स्टेशनों के बीच स्थित पुल संख्या 61 के री-गर्डरिंग कार्य के माध्यम से एक महत्वपूर्ण अवसंरचनात्मक उन्नयन किया गया, जो सुरक्षित एवं अधिक सुदृढ़ उपनगरीय नेटवर्क के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वर्ष 1897 के विक्टोरियन काल में निर्मित इस 129 वर्ष पुराने पुल को चरणबद्ध तरीके से हटाकर उसकी जगह आधुनिक एवं उच्च क्षमता वाली संरचना स्थापित की गई है, जो वर्तमान परिचालन एवं सुरक्षा मानकों के अनुरूप है।
पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह कार्य 28 मार्च 2026 को 22:30 बजे से 29 मार्च 2026 को 19:30 बजे तक निर्धारित मेगा ब्लॉक के दौरान किया गया। इसके अतिरिक्त, 29 मार्च 2026 को प्रातः

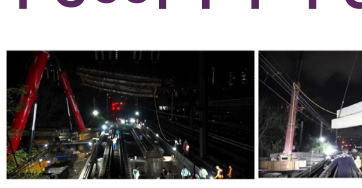

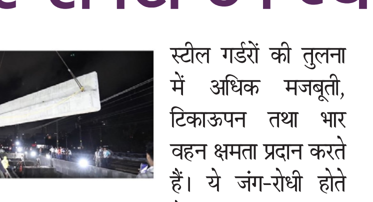

01:00 बजे से 04:30 बजे तक डाउन फास्ट लाइन पर भी कार्य किया गया। पश्चिम रेलवे द्वारा सुव्यवस्थित समय-सीमा में इस जटिल इंजीनियरिंग कार्य को सफलतापूर्वक सीमित समय में पूरा किया गया, जिससे दीर्घकालिक व्यवधान को न्यूनतम रखते हुए कार्य की सटीकता सुनिश्चित की गई। श्री विनीत ने आगे बताया कि इस प्रक्रिया में पुराने स्टील गर्डरों के चार स्पैन को सावधानीपूर्वक हटाया गया तथा 8 स्टील गर्डरों के डी-लॉन्चिंग के पश्चात 28 प्री-स्ट्रेस्ड कंक्रीट (PSC) स्लैब एवं 8 रिटेनर स्थापित किए गए। पीएससी स्लैब पारंपरिक स्टील गर्डरों की तुलना में अधिक मजबूती, टिकाऊपन तथा भार वहन क्षमता प्रदान करते हैं। ये जंग-रोधी होते हैं, कम रखरखाव की आवश्यकता होती है तथा बेहतर संरचनात्मक स्थिरता प्रदान करते हैं, जिससे सघन उपनगरीय रेल यातायात एवं प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं। इनके उपयोग से समग्र सुरक्षा में वृद्धि के साथ-साथ ट्रेन परिचालन अधिक सुगम एवं प्रभावी होता है। इस उन्नयन कार्य के निष्पादन में उन्नत इंजीनियरिंग तकनीकों एवं अत्याधुनिक मशीनरी का उपयोग किया गया, जिसमें हेवी-ड्यूटी क्रेन, हाइड्रा मशीनें, पोकलेन एक्स्कावेटर तथा जेसीबी उपकरण शामिल थे। ट्रैक कटिंग, गर्डर हटाना, नई संरचनाओं को उठाना एवं स्थापित करना तथा एलाइनमेंट जैसे कार्य उच्च सटीकता के साथ संपन्न किए गए। 200 से अधिक कर्मियों की समर्पित टीम ने निरंतर कार्य करते हुए उत्कृष्ट योजना, समन्वय एवं तकनीकी दक्षता का परिचय दिया।
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर श्री अजय सिंह राजपूत के अनुसार, यह पहल पश्चिम रेलवे की मानसून तैयारी रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस उन्नयन का उद्देश्य भारी वर्षा एवं प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के दौरान अवसंरचना की विश्वसनीयता, स्थिरता एवं सेफ्टी को सुदृढ़ करना है।
यह परिवर्तन मुंबई के लाखों दैनिक यात्रियों के लिए एक अधिक मजबूत, टिकाऊ एवं भविष्य के लिए तैयार रेलवे नेटवर्क के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भावनगर टर्मिनस स्टेशन पर रेलकर्मियों की ईमानदारी एवं तत्परता की सराहनीय मिसाल

यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं विश्वास को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के कर्मचारियों द्वारा एक बार फिर उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी का परिचय दिया गया है। दिनांक 31/03/2026 (मंगलवार) की सुबह भावनगर टर्मिनस स्टेशन पर गाड़ी संख्या 59204 भावनगर–बोटाद दैनिक पैसेंजर के एक यात्री श्री प्रेमजीभाई वानिया, निवासी सोनगढ़, अपना कीमती मोबाइल फोन अनारक्षित टिकट खिड़की पर अनजाने में भूल गए।
ड्यूटी पर तैनात टिकट बुकिंग क्लर्क श्री विक्रमसिंह मकवाना एवं

श्री रणजीतसिंह चौहान ने तत्परता दिखाते हुए उक्त मोबाइल को सुरक्षित अपने पास रखा तथा तुरंत उद्घोषणा (अनाउंसमेंट) करवाकर संबंधित यात्री को बुलाया। यात्री की पहचान सुनिश्चित करने के पश्चात उनका मोबाइल उन्हें सकुशल वापस लौटा दिया गया। अपने खोए हुए मोबाइल की सुरक्षित प्राप्ति पर यात्री ने रेलवे प्रशासन एवं संबंधित रेलकर्मियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि यह पिछले दस दिनों में दूसरा अवसर है जब श्री विक्रमसिंह मकवाना द्वारा इस प्रकार की ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।
मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने संबंधित वाणिज्य विभाग के कर्मचारियों की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करते रहने हेतु प्रोत्साहित किया।